॥ वास्तु शान्ति, गृहप्रवेश एवं नींव पूजन पद्धति ॥

॥ अनुक्रमाणिका ॥

1. गृहप्रवेश मुहूर्त विचारणीय 02
2. पवित्र - आचमन 05
3. स्वस्ति वाचन 05
4. संकल्प 07
5. गणेश अम्बिका पूजन 09
6. कलश स्थापनम् 09
7. पुण्याह वाचनम् 12
8. आचार्यादि वरणम् 19
9. अविघ्न पूजनम् 20
10. तोरण (वन्दनवार) पूजनम् 20
11. पंचगव्य करणम् 21
12. षोडश मातृका पूजनम् 22
13. सप्तस्थल मातृका पूजनम् 25
14. सप्तघृत मातृका (वसोर्धारा) पूजनम् 26
15. आयुष्य मंत्र 27
16. नान्दीमुख श्राद्ध प्रयोग 28
17. चतु:षष्ठि योगिनी स्थापनम् 33
18. क्षेत्रपाल स्थापनम् 34
19. नवग्रह स्थापनम् 35
20. इन्द्रध्वज (ध्वजा) पूजनम् 39
21. सर्वतोभद्र मण्डल स्थापनम् 40
22. वास्तु स्थापनम् 41
23. अग्नि स्थापनम् 47
24. कुश कण्डिका 50
25. आहुति मंत्र 52
26. पुरुषुक्त आहुति 54
27. श्री सुक्त आहुति 55
28. बलिदान (दशदिग्पाल, नवग्रह, वास्तु, प्रधान, क्षेत्रपाल) 55
29. पूर्णाहुति 59
30. वसोर्धारा 60
31. गृहप्रवेश कर्म 62
32. आरती 64
33. पूष्पांजलि 65
34. प्रदक्षिणा 65
35. आचार्य दक्षिणा 66
36. उत्तर पूजन 66
37. विसर्जन 66
38. प्रार्थना 66
39. आशिर्वाद 66
40. अभिषेक मन्त्र 66

गृहप्रवेश मुहूर्त

गृहप्रवेश-मुहूर्त के सम्बन्ध में विचार करने से पूर्व 'गृहप्रवेश' की परिभाषा को समझ लेना उचित है। सामान्य तौर पर गृहप्रवेश दो प्रकार का होता है - नूतन और जीर्ण; किन्तु किंचित आचार्यों ने इसे तीन प्रकार का कहा है - सपूर्व, अपूर्व और द्वन्द्व।

- **गृहप्रवेश में विचारणीय बातें**
  - **अपूर्वसंज्ञः प्रथमः प्रवेशो,यात्रावसाने च सपूर्वसंज्ञः।**
    द्वन्द्वामयस्त्वग्निभयादिजातस्त्वेवं प्रवेशस्त्रिविधः प्रदिष्टः॥
  - अपूर्व — नूतन गृहप्रवेश को कहते हैं।
  - सपूर्व — युद्धादि विजयोपरान्त राजाओं के राजभवन प्रवेश को कहते हैं।
  - द्वन्द्व — अग्न्यादि आपात कालिक कारणों से पुराने भवन में वापसी (प्रवेश) को कहते है।
  - **यात्राविवृत्तौ शुभदं प्रवेशनं मृदु-ध्रुवैः क्षिप्र-चरैः पुनर्गमः।**
    द्वीशेऽनले दारुणभे तथोग्रभे स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं क्रमात्॥
  - **सौम्यायने ज्येष्ठतपोऽन्त्यमाघवे यात्राविवृत्तौ नृपतेर्नवे गृहे।**
    स्याद्वेशनं द्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयोदये स्थिरे॥ (मु. चि. १३-१)
  - **जीर्णे गृहेऽग्न्यादिभयान्नवेऽ मार्गोर्जयोः श्रावणिकेपि सन्स्यात्।**
    वेशोऽम्बुपेज्यानिलवासवेषु नाऽऽवश्यमस्तादिविचारणाऽत्र॥ (मु. चि. १३-२)

- **अयन** — नूतन गृहप्रवेश उत्तरायण सूर्य (मकर,कुम्भ,मीन,मेष,वृष,मिथुन राशियों)
  - जीर्णादि गृहप्रवेश उत्तरायण वा दक्षिणायण किसी भी स्थिति में होता है।

- माह — नुतनगृहे — वैशाख, ज्येष्ठ, फाल्गुन, माघ — उत्तम
  - जीर्णगृहे — श्रावण, मार्गशीर्ष, कार्तिक — मध्यम
  - क्षयमास, अधिकमास और खरमास भी सर्वदा वर्जित हैं।

- **पक्ष** — शुक्ल पक्ष प्रशस्त है। कृष्ण पक्ष की दशमी तक ही ग्राह्य है।
  - किंचित मत से कृष्णपक्ष नूतन गृहप्रवेश में ग्राह्य नहीं है।

- **तिथि** — **पूर्णा तिथौ प्राग्वदने गृहे शुभो नन्दादिके याम्यजलोत्तरानने॥ (मु. चि. १३-५)**
  - द्वारदिशानुसार भी प्रवेश तिथि का संकेत मिलता है।
  - पूर्व द्वार हो तो — पूर्णा — पंचमी, दशमी, पूर्णिमा
  - दक्षिण द्वार हो तो — नन्दा — प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी
  - पश्चिम द्वार हो तो — भद्रा — द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी
  - उत्तर द्वार हो तो — जया — तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी

- **नक्षत्र**
  - ध्रुव (स्थिर) संज्ञक — रोहिणी, उत्तराफाल्गुन, उत्तराषाढ़, उत्तरभाद्र
  - मृदु (मैत्र) संज्ञक — मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती
  - क्षिप्र (लघु) संज्ञक — अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित
  - चर (चल) संज्ञक — पुनर्वसु, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा
  - धनिष्ठा, शतभिषा, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, रेवती इन नक्षत्रों में पुराने मकानमें प्रवेश करै।

- **वार**
  - सोमनार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, और शनिवार शुभ दिन माने गए हैं।
  - **आदित्य भौम वर्ज्यारतु सर्वे वाराः शुभानहाः ।**
    केचिच्छनिं प्रशंसंति चौरभीतिस्तु जायते ॥
    मंगलवार और रविवार को कभी भी भूमिपूजन, गृह निर्माण, शिलान्यास या गृहप्रवेश की शुरवात नही करना चाहिए। परंतु शनिवार में करने से चोरों का भय होता है।

- **लग्न**
  - **उत्तम (स्थिर लग्न)** — **वृषभ, सिंह,** वृश्चिक, कुम्भ
  - **मध्यम (चर लग्न)** — **मिथुन, कन्या, धनु, मीन**
  - गृहस्वामी के जन्म लग्न से ३, १०, ११ राशि- लग्न अतिशुभ है।

- **लग्नशुद्धि**
  - लग्नशुद्धि से तात्पर्य है कि जिस लग्न में प्रवेश करना है वहाँ से गणना करने पर १,२,३,५,७,९,१०,११ स्थानों में शुभग्रह, एवं ३,६,११ स्थानों में पापग्रह, तथा ४,८ शुभाशुभ रहित यानी पूर्ण रिक्त होना चाहिए।

- **चन्द्रशुद्धि**
  - किसी भी शुभकार्य में स्वामी (कार्यकर्ता) की नाम राशि के अनुसार कार्य दिवसीय चन्द्रमा की स्थिति का विचार कर लेना चाहिए ।
  - नाम राशि से चौथे, आठवें चन्द्रमा सदा अशुभ फलदायी होते हैं।
  - बारहवें होने पर पूजित होकर शुभ हो जाते हैं
  - शेष स्थानों पर शुभफलदायी कहे गये हैं।

- **वामरवि विचार**
  - **वामोरविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽर्के पञ्चभे प्राग्वदनादिमन्दिरे। (मु. चि. १३-५)**
  - गृहप्रवेश के लिए चयनित लग्न से तात्कालिक सूर्य स्थिति की गणना करके वामरवि की जानकारी की जाती है। जो प्रवेशकार्य में अतिशुभ माना गया है।
  - पूर्वमुख गृह के लिए लग्न से ८,९,१०,११,१२ वें स्थान में सूर्य होतो शुभ होगा।
  - दक्षिणमुख गृह के लिए लग्न से ५,६,७,८,९ वें स्थान में सूर्य होने पर शुभ होगा।
  - पश्चिममुख गृह के लिए लग्न से २,३,४,५,६ वें स्थान पर सूर्य होने पर शुभ होगा।
  - उत्तरमुख गृह के लिए लग्न से ११,१२,१,२,३ वें स्थान पर सूर्य होने पर शुभ होगा।

- **जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त**

  इस सम्बन्ध में विशेष बात यह है कि दक्षिणायन सूर्य में भी हो सकता है, तथा इसमें गुरु-शुक्रादि ग्रहों के उदयास्त का विचार **अनिवार्य** नहीं है।

- **कुम्भचक्रशुद्धि**

  वक्त्रे भू रविभात् प्रवेशसमये कुम्भेऽग्निदाहः कृता,
  प्राच्यामुद्वसनं कृता यमगता लाभः कृताः पश्चिमे ।
  श्रीर्वेदाः कलिरुत्तरे युगमिता गर्भे विनाशो गुदे,
  रामः स्थैर्यमतः स्थिरत्वमनलाः कण्ठे भवेत् सर्वदा ॥ (मु.चि.वा.प्र.६)

  - इसकी अनिवार्यता सर्वोपरि है, यानी अन्यान्य सारी स्थितियाँ शुद्ध होने पर भी इसकी अशुद्धि रहने पर गृहप्रवेश कार्य नहीं करना चाहिए। इस चक्र की परीक्षा हेतु चयनित काल के सूर्य नक्षत्र से चयनित काल के चन्द्र नक्षत्र तक की गणना की जाती है एक कलश की आकृति में सभी नक्षत्रों को क्रमवार सजा कर। प्रथम पांच के परिणाम अशुभ, पुनः आठ के परिणाम शुभ, पुनः आठ के परिणाम अशुभ और अन्तिम छः के परिणाम शुभ कहे गये हैं। इसकी स्पष्टी हेतु आगे दिये गये चक्र का अवलोकन करें।

- **शेषशिरोज्ञानम्**

  भाद्रत्रये शिरः प्राच्यां याम्यां मार्गत्रये शिरः।
  फाल्गुनत्रितये पश्चात् शिरो ज्येष्ठत्रये ह्युदक् ॥
  भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक इन तीन महीनोंमें पूर्व दिशामें, मार्गशीर्ष, पौष, माघ ये तीन महीनों में दक्षिण दिशा में फागुन, चैत्र, वैशाख इन तीन महीनों में पश्चिम दिशा में और जेठ, आषाढ, और श्रावण इन तीन महीनों में शेष नाग का सिर उत्तर दिशा में रहता हैं।

- नये घर में प्रवेश करने के पहले वास्तु शान्ति करनी चाहिए इसे ही गृहप्रवेश कहते है।
- कुछ शास्त्रों में घर के बाहर मण्डप बनाकर सारी प्रक्रिया पूरी करने के उपरान्त गृहप्रवेश की विधि लिखी है।
- वृहद् वास्तुमाला के अनुसार घर के अन्दर वास्तु शांति की विधि लिखी है।
- आजकल बिल्डीगों की अधिकता होने के कारण घर के भीतर ही सारी पूजाएँ होती है।
- इस पद्धति में घर के अन्दर की विधि लिखी है।
- मण्डप और घर के अन्दर में मात्र इतना ही अन्तर है कि मंडप में भूमि पूजन, मंडपाच्छादन, स्तम्भ पूजन आदि करने के बाद वास्तु शान्ति की जाती है।
- घर के अन्दर करनें पर मंडप निर्माण की प्रक्रिया नहीं होती वास्तु शान्ति में कोई अन्तर नहीं है।

॥ पूजन प्रारम्भ ॥

- **पवित्रकरणम्**
  ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
  य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ॥

- **आचम्य**
  ॐ केशवाय नम:, ॐ माधवाय नम:, ॐ नारायणाय नम: आचमन करें
  ॐ हृषीकेशाय नम: हाथ धो लें

- **आसन शुद्धि**
  ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
  त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

- **पवित्री (पैंती) धारणम्**
  ॐ पवित्रे स्त्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व: प्रसवऽ उत्त्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण
  सूर्यस्य रश्मिभि:। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्काम: पूनेतच्छकेयम् ॥

- **यज्ञोपवित**
  ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात।
  आयुष्यं मग्रंय प्रतिमुन्च शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेज: ॥

- **शिखाबन्धन**
  ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेज: समन्विते।
  तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धि कुरुव मे ॥

- **तिलक**
  ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्।
  आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा ॥
  - ॐ स्वस्तिस्तु याऽ विनशाख्या धर्म कल्याण वृद्धिदा।
    विनायक प्रिया नित्यं तां स्वस्तिं भो ब्रवंतु न: ॥

- **रक्षाबन्धनम्**
  ॐ येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबल:।
  तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचल: ॥
  - ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
    दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

- **स्वस्ति-वाचन**
  ॐ आ नो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ दब्धासो अपरीतास उद्भिद:।
  देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥
  - देवानां भद्रा सुमतिर्ऋ जूयतान्देवाना ७ राति रभिनो निवर्तताम्।
    देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयु: प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥
  - तान्पूर्वया निविदा हूमहेवयम् भगम् मित्रमदितिन् दक्षमस्रिधम्।
    अर्यमणं वरुण ७ सोम मश्विना सरस्वती न: सुभगा मयस्करत् ॥३॥

- तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
  तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिष्ण्या युवम् ॥४॥
- तमीशानन् जगतस् तस्थुषस्पतिन् धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
  पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥
- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्वेवेदाः ।
  स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥
- पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावानो विदथेषु जग्मयः ।
  अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह ॥७॥
- भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।
  स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥
- शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम् ।
  पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषतायुर्गन्तोः ॥९॥
- अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्रः ।
  विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम् ॥१०॥
- द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
  शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७
  शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥११॥
- यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
  शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥१२॥

1. श्रीमनमहागणाधीपतये नमः
2. इष्ट देवताभ्यो नमः
3. कुल देवताभ्यो नमः
4. ग्राम देवताभ्यो नमः
5. स्थान देवताभ्यो नमः
6. वास्तु देवताभ्यो नमः
7. वाणीहिरण्यगर्भाभ्याम नमः
8. लक्ष्मी नारायणाभ्याम नमः
9. उमा महेश्वराभ्याम नमः
10. शची पुरंदाराभ्याम नमः
11. मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः
12. सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
13. सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः
14. एतत कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः ।

- सुमुखश्चै एकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः ।
  लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
- धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
  द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
- विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
  संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
- शुक्लाम्बरधरम देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम ।
  प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये ॥

- अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
  सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
- सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
  शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥
- सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम।
  येषां हृदयस्थो भगवान मंगलायतनो हरीः ॥
- तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव।
  विद्याबलं दैवबलम तदेव लक्ष्मीपते तेन्घ्री युगं स्मरामि ॥
- वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ।
  निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

- **संकल्प** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, ॐ श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैक देशे, अमुकक्षेत्रे, अमुकदेशे, अमुकनाम्नि नगरे, (ग्रामे वा) बौद्धावतारे अमुक शालीवाहन शके, अस्मिन्वर्तमाने, अमुक नाम संवत्सरे, अमुकायने, मासानां मासोत्तमे मासे अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, यथा नक्षत्रे, यथा राशि स्थिते सूर्ये, यथा यथा राशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु, यथा लग्न मुहूर्त योग करणान्वितायाम् एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति कामः अमुक गोत्रः, अमुक नामाहम्, जन्म लग्नतोवा दुसस्थानगत ग्रहजन्य सकलारिष्ट निवृत्यर्थम उत्पन्न उत्पत्स्यमानः अखिलारिष्ट निवृत्तये दिर्घायुष्य सततारोग्यतावाप्तये च धन धान्य समृद्ध्यर्थं कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक चतुर्विध पुरुषार्थं प्राप्त्यर्थम् च धन पुत्र पौत्रादि अनवच्छिन्न सत् संगति लाभार्थम् शत्रु पराजय बहु कीर्त्यादि अनेकानेक अभ्युदय फल प्राप्त्यर्थम् लोके सभायां वा राजद्वारे सर्वत्र यशो विजय लाभादि प्राप्त्यर्थं च इह जन्मनि जन्मान्तरे व सर्वपापक्षयार्थम् तथा च मम् सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य समस्त व्याधा जरा पीडा द्वारा अभिलषित मनोरथानां सिद्धये मम नूतन निर्मित गृहे कृमि कीट पतंगादि वृक्षौषध्यादि जीव हिंसा निवृत्यर्थम् गृहेप्रवेश कर्मणि वास्तुकृत सर्व दोषोपशांतये शिख्यादि देवता प्रीतये च वास्तु शान्ति करिष्ये।

  तदंगत्वेन स्वस्ति पुण्याहवाचनं मातृका पूजनं वसोर्धारा पूजनं नान्दि श्राद्धं ग्रह स्थापनम् पूजनादिकं च करिष्ये।

  तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थम गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

- **पृथ्वी ध्यानम्**

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

- **रक्षा विधानम्**

अप सर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

  - अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
    सर्वेषाम विरोधेन पूजा कर्म समारभे ॥
  - यदत्र संस्थितं भूतं स्थान माश्रित्य सर्वतः ।
    स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्व यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥
  - भूत प्रेत पिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः ।
    स्थानादस्माद् ब्रजन्त्यन्यत्स्वी करोमि भुवं त्विमाम् ॥
  - भूतानि राक्षसा वापि येत्र तिष्ठन्ति केचन ।
    ते सर्व प्यपगच्छन्तु देव पूजां करोम्यहम् ॥

- **दिपस्थापनम्**

ॐ शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुख सम्पदाम् ।
मम बुद्धि विकाशाय दीपज्योतिर्नमोस्तुते ॥

  - भो दीप देव रूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
    यावत्कर्म समाप्तिः स्यात तावत्वं सुस्थिरो भव ॥

- **सूर्यनमस्कार**

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

- **शंख पूजनम्**

ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि ।
तन्नो शंखः प्रचोदयात् ॥

  - त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करें ।
    निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते ॥

- **घंटी पूजनम्**

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
घण्टा नाद प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत ॥

॥ गणेश अम्बिका पूजनम् ॥

- **गणेश ध्यानम्**

  गजाननम्भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फलचारु भक्षणम् ।
  उमासुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥
  - विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
    नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
  - वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटी समप्रभा ।
    निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व-कार्येशु सर्वदा ॥

  ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नम: । गणपतिम् आ. स्था. पूजयामि ।

- **गौरी ध्यानम्**

  ॐ हेमद्रितनायां देवीं वरदां शंकरप्रियां ।
  लम्बोदरस्य जननीं गौरीं आवाह्याम्यहम् ॥
  - ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ।
    ससतस्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

  ॐ भूर्भुव: स्व: गौर्यै नम: । गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।

॥ कलश स्थापनम् ॥

- **भूमि स्पर्श**

  ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ।
  पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ७ ह पृथिवीं माहि ७ सी: ॥
  - ॐ विश्वाधाराऽसि धरणी शेषनागोपरि स्थिता ।
    उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ (भूमि का स्पर्श करें)

- **धान्य प्रक्षेप**

  ॐ ओषधय: समवदन्त, सोमेन सह राज्ञा ।
  यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ७ राजन् पारयामसि ॥ (भूमि पर सप्तधान्य रखें)

- **कलश स्थापयेत्**

  ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दव: पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा न:।
  सहस्रं धुक्ष्वोरु धारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयि:॥
  - हेमरुप्यादि सम्भूतं ताम्रजं सुदृढं नवम् ।
    कलशं धौतकल्माषं छिद्रवर्ण विवर्जितम् ॥ (सप्तधान्य पर कलश रखें)

- **कलशे जलपूरणम्**

  ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुणस्य ऽऋत
  सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीद् ॥
  - जीवनं सर्व जीवानां पावनं पावनात्मकम् ।
    बीजं सर्वौषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम् ॥ (कलश में जल डाल दें)

- **कलशे कुश प्रक्षेप**
  ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

- **कलशे गन्ध प्रक्षेप**
  ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वाँ बृहस्पतिः।
  त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्माद मुच्च्यत ॥
  - केशरागरु कंकोलघन सार समन्वितम्।
    मृगनाभियुतं गन्धं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में चन्दन छोडें)

- **कलशे धान्य प्रक्षेप**
  ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा।
  दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः
  प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥
  - धान्योषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्।
    निर्मिता ब्रह्मणा पूर्वं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में सप्तधान्य छोडें)

- **कलशे सर्वौषधी प्रक्षेप**
  ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।
  मनैनु बभ्रूणामह ७ शतं धामानि सप्त च ॥
  - औषधयः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः।
    दुर्वासर्षप संयुक्ताः कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में सर्वोषधि डालें)

- **कलशे दूर्वा प्रक्षेप**
  ॐ काण्डात काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
  एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥
  - दूर्वेह्यमृत सम्पन्ने शतमूले शतांकुरे।
    शतं पातक संहन्त्री कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में दुर्वा छोडें)

- **कलशे आम्रपल्लव प्रक्षेप**
  ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
  गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥ (कलश में आम का पत्ता रखें)

- **कलशे सप्तमृत्तिका प्रक्षेप**
  ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

- **कलशे फल प्रक्षेप**
  ॐ याफलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी।
  बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ हसः ॥ (कलश में सोपारी रखें)

- **कलशे पंचरत्न प्रक्षेप**
  ॐ परिवाज पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

- **कलशे हिरण्य प्रक्षेप**
  ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत।
  स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

- **हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।**
  अनन्त पुण्य फलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में दक्षिणा छोडें)

- **कलश में सूत्र लपेटे** — **ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमा सदत्स्वः ।**
  वासो अग्ने विश्वरूप ७ संव्ययस्व विभावसो ॥ (कलश में मौली लपेट दें)

- **कलश पर प्याला रखें** — **ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।**
  वस्न्नेव विकृणावहा इषमूर्ज ७ शतक्रतो ॥ (कलश पर पूर्णपात्र रखें)

- **कलश पर नारीयल रखें** — **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।**
  इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ (पूर्णपात्र पर नारियल रखें)

- **कलश पर दीपक रखें** — **ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।**
  अग्निवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
  ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ (पूर्णपात्र के उपर दीपक रखें)

- **कलश आवाहन** — **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।**
  अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ७ समा न आयुः प्र मोषीः॥
  - **कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्र समाश्रिताः ।**
    मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मात्र गणाः स्मृताः ॥
  - **कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्विपा वसुंधरा ।**
    ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणाः ॥
  - **अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।**
    अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
  - **आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः, गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन संनिधिं कुरु ॥**
  - अस्मिन कलशे वरुणं सांङ्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण ! इहागच्छ इह तिष्ठ स्थापयामि, पूजयामि मम पूजां गृहाण, ॐ अपां पतये वरुणाय नमः

- **कलश चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत्** (कलश के चारो तरफ कुंकुम एवं चावल लगा दें)

- **पूर्व** — **ऋग्वेदाय नमः ।**
- **दक्षिण** — **यजुर्वेदाय नमः ।**
- **पश्चिम** — **सामवेदाय नमः ।**
- **उत्तर** — **अथर्वेदाय नमः ।**
- **कलश के ऊपर** — **ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः ।**

॥ पुण्याहवाचनम् ॥

- पुण्याहवाचन के लिए एक मिट्टी, ताँबे या चाँदी का कलश वरुण कलश के पास जल से भर कर स्थापित करे।
- वरुण कलश के पूजन के साथ इसका भी पूजन कर लेना चाहिए।
- पुण्याहवाचन का कर्म इसीसे किया जाता है।

- **ब्राह्मण वरण**
  - **संकल्प** देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रो, अमुक शर्मा, अमुक कर्मणि सर्वाभ्युदय प्राप्तये एभिर्ब्राह्मणैः पुण्याहं वाचयिष्ये, तदंगतया ब्राह्मणानां पूजनं वरणं च करिष्ये।
    - **भुमि देवाग्र जन्मासि त्वं विप्र पुरुषोत्तम।
प्रत्यक्षो यज्ञपुरुषो ह्यर्णोऽर्घोयं प्रतिगृह्यताम्॥**
  - **ब्राह्मण वरण** **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्॥**
    - **नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटी युग धरिणे नमः॥**
  - **यजमान** एभिर्गन्धाक्षत पुष्प पूंगीफल द्रव्यैः अमुक कर्मणि सर्वाभ्युदय प्राप्तये पुण्याहवाचनार्थं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे।
  - **ब्राह्मण** **वृतोस्मि**
  - **ब्राह्मण ध्यान** **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विषीमतः सुरुचोव्वेन आवः।
स बुध्न्या उपमाऽ अस्य विष्ठाः शतश्च योनिम शतश्च व्विवः॥**
  - **वरुण प्रार्थना** **ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।
पुण्यावाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥**

- यजमान दोनों घुटनों को पृथ्वी पर मोडकर कमल के सदृश अपनी अञ्जलि में कलश को रखकर अपने सिर पर स्पर्श कर आशीर्वाद के लिए ब्राह्मणों से प्रार्थना करें।
- **यजमान** **ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥** आशीर्वाद मांगे
- **ब्राह्मण** **अस्तु दीर्घमायुः। अस्तु दीर्घमायुः। अस्तु दीर्घमायुः।**
- **यजमान** **ॐ त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु इत भवन्तो ब्रुवन्तु॥**
- **ब्राह्मण** **पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।** दो बार सिर से कलश का स्पर्श कर रख दें

- **यजमान** ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ।
  ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः ॥
  ॐ शिवा आपः सन्तु । (यजमान ब्राह्मणों के हाथों में जल दे ।)
- **ब्राह्मण** सन्तु शिवा आपः ।
- **यजमान** लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
  सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे ॥
  सौमनस्यमस्तु । (ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दें ।)
- **ब्राह्मण** अस्तु सौमनस्यम् ।
- **यजमान** अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।
  यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥
  अक्षतं चारिष्टं चास्तु । (ब्राह्मणों के हाथ में चावल दें ।)
- **ब्राह्मण** अस्त्वक्षतमरिष्टं चं ।
- **यजमान** गन्धाः पान्तु । (ब्राह्मणों के हाथ में चन्दन दें ।)
- **ब्राह्मण** सौमङ्गल्यं चास्तु ।
- **यजमान** अक्षताः पान्तु । (ब्राह्मणों के हाथ में पुनः चावल दें ।)
- **ब्राह्मण** आयुष्यमस्तु ।
- **यजमान** पुष्पाणि पान्तु । (ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दें ।)
- **ब्राह्मण** सौश्रियमस्तु ।
- **यजमान** सफलताम्बूलानि पान्तु । (ब्राह्मणों के हाथ में सुपारी-पान दें ।)
- **ब्राह्मण** ऐश्वर्यमस्तु ।
- **यजमान** दक्षिणाः पान्तु । (ब्राह्मणों के हाथ में दक्षिणा दें ।)
- **ब्राह्मण** बहुदेयं चास्तु ।
- **यजमान** आपः पान्तु । (ब्राह्मणों के हाथ में पुनः जल दें ।)
- **ब्राह्मण** स्वर्चितमस्तु ।
- **यजमान** दिर्घमायुः, शान्तिः, पुष्टिः, तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं
  बहुधनं चायुष्यं चास्तु । (हाथ जोड़कर)
- **ब्राह्मण** अस्तु । ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिचास्तु ।
- **यजमान** यं कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रिया करण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः

प्रवर्तन्ते, तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। (अक्षत लेकर)

- **ब्राह्मण** — वाच्यताम्।

- ऐसा कहकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करे ....

- **ऋग्वेद मंत्र:** — ॐ द्रविणोदा द्रविण सस्तुरस्य द्रविणोदाः सनस्य प्रयंसत्।
  द्रविणोदा वीरवती मिषन्नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः ॥१॥
  - सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात सविता धरातात्।
    सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नां रासतान् दीर्घमायुः ॥२॥
  - नवो नवो भवति जायमानो ऽहान्कोतुरुषसामेत्यग्रम्।
    भागं देवेभ्यो विद्धात्यायन्प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥३॥
  - उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्तुर्ये अश्वदाः सह ते सूर्येण।
    हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्रतिरन्त आयुः ॥४॥

- **यजुर्वेद मंत्र:** — ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः।
  स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥
  - देवानां भद्रा सुमतिर्ऋ जूयतान्देवाना ७ राति रभिनो निवर्तताम्।
    देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥
  - दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
    अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥३॥

- **सामवेद मंत्र:** — ॐ देवो ३ वो द्रविणो दाः पूर्णा विवष्ट्वा सिचम्। ऊद्वा १ सिञ्चा २। ध्वमुपवापृणध्वम्। आदिद्वोदे २। व ऊहते। इडा २,३ भा ३,४,३। ऊ २,३,४,५ इ। डा ॥१॥
  - अद्यनो देव सवितः। ओ हो वा। इह श्रुधायि। प्रजावा २,३ त्सा। वीः सौभगाम्। परादू २,३ ष्वा ३। हो वा ३ हा। प्रिय ७ सु २,३,४,५ वा ६,५,६ दक्षा ३ या २,३,४,५ ॥२॥

- **अथर्वेद मंत्र:** — धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर् निधिपतिर्नोऽ अग्निः।
  त्वष्टा विष्णुः प्रजया संरराणो यजमानाय द्रविणं दधातु ॥१॥
  - येन देवं सवितारं पति देवा अधारयन्।
    तेनेमम् ब्रह्मणस्पते परि राष्ट्राय धत्तन ॥२॥
  - नवोनवो भवसि जयमानोऽ ह्वां केतुरुषसामेत्यग्रम्।
    भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥३॥

- उच्चैर्घोषो दुन्दुभिः सन्त्वनायन् वानस्पत्यः सम्भृत उस्रियाभिः ।
  वाचं क्षुणुवानो दमयन्त्सपत्नन्त्सिंह इव जेष्यमभि षंस्तनीहि ॥४॥

- **विप्राः** करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः ।
  सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा ॥१॥
  - ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः ।
    तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ॥२॥
  - स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च ।
    स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा ॥३॥
  - स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वंतु ते सदा ।
    करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे ॥४॥
  - लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ ।
    असितो देवलश्चैव विश्वामित्र स्तथाङ्गिराः ॥५॥
  - वसिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ।
    धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः ॥६॥
  - स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्च षण्मुखः ।
    विवस्वान् भगवान् स्वस्ति कतोतु तव सर्वदा ॥७॥
  - दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।
    अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः ॥
    शेषश्च पन्नग श्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु ॥८॥

- **यजमान** व्रत जप नियम तपः स्वाध्याय क्रतु शम दम दया दान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ।
- **ब्राह्मण** समाहितमनसः स्मः ।
- **यजमान** प्रसीदन्तु भवन्तः ।
- **ब्राह्मण** प्रसन्नाः स्मः ।

- इसके बाद यजमान पुण्याहवाचन वाले कलश को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से आम्र पल्लव या दूर्वा द्वारा प्रथम पात्र एवं द्वितीय पात्र में आगे के प्रत्येक मंत्र से जल छोडें। ब्राह्मण बोलते जाय।
- **प्रथम पात्र** ब्राह्मण हर वचन पर अस्तु कहता रेहे।

1. ॐ शान्तिरस्तु।
2. ॐ पुष्टिरस्तु।
3. ॐ तुष्टिरस्तु।
4. ॐ वृद्धिरस्तु।
5. ॐ अविघ्नमस्तु।
6. ॐ आयुष्यमस्तु।
7. ॐ आरोग्यमस्तु।
8. ॐ शिवमस्तु।
9. ॐ शिवं कर्मास्तु।
10. ॐ कर्म समृद्धिरस्तु।
11. ॐ धर्म समृद्धिरस्तु।
12. ॐ वेद समृद्धिरस्तु।
13. ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु।
14. ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु।
15. ॐ पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु।
16. ॐ इष्ट संपदस्तु

- **द्वितीय पात्र** ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगोऽ शुभम कल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु।

- **प्रथम पात्र**

1. ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु।
2. ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु।
3. ॐ उत्तरोत्तर महरहरभि वृद्धिरस्तु।
4. ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्।
5. ॐ तिथि करण मुहुर्त नक्षत्र ग्रह सम्पदस्तु।
6. ॐ तिथि करण मुहुर्त नक्षत्र ग्रह लग्नादि देवताः प्रीयन्ताम्।
7. ॐ तिथि करणे समुहुर्त सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्।
8. ॐ दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयेताम्।
9. ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।
10. ॐ इंद्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्।
11. ॐ वसिष्ठ पुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्।
12. ॐ माहेश्वरी पुरोगा उमा मातरः प्रीयन्ताम्।
13. ॐ अरुन्धति पुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्।
14. ॐ ब्रह्म पुरोगा सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्।
15. ॐ विष्णु पुरोगा सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् ।
16. ॐ ऋषय श्छंदास्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्।
17. ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्।
18. ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्।
19. ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्।
20. ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयेताम्।
21. ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयेताम्।
22. ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयेताम्।
23. ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्।
24. ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयेताम्।
25. ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयेताम्।
26. ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्।
27. ॐ सर्वाःकुलदेवताः प्रीयन्ताम्।
28. ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्।
29. ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

- **द्वितीय पात्र**

1. ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः।
2. ॐ हताश्च परिपन्थिनः।
3. ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः।
4. ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु।
5. ॐ शाम्यन्तु घोराणि।
6. ॐ शाम्यन्तु पापानि।
7. ॐ शाम्यन्त्वीतयः।
8. ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।

- **प्रथम पात्र**

1. ॐ शुभानि वर्धन्ताम्।
2. ॐ शिवा आपः सन्तु।
3. ॐ शिवा ऋतवः सन्तु।
4. ॐ शिवा अग्नयः सन्तु।
5. ॐ शिवा आहुतयः संतु।
6. ॐ शिवा ओषधयः सन्तु।
7. ॐ शिवा वनस्पतयः संतु।
8. ॐ शिवा अतिथयः संतु।
9. ॐ अहोरात्रे शिवे स्त्याताम्।

- ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

- **यजमान** **ॐ शुक्रांगारक बुध बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोम सहिता आदित्य पुरोगा सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम्।**

- **ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्।**
- **ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम्।**
- **ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्।**
- **ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु।**
- **ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु।**
- **ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु।**
- **ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।**

- यजमान कलश को कलश के स्थान पर रखकर पहले पात्र में गिराये गये जल से मार्जन करे।
- इसके बाद इस जलको घरमें चारों तरफ छिड़क दे।
- द्वितीय पात्र में जो जल गिराया गया है, उसको घर से बाहर एकान्त स्थान में गिरा दे।
- यजमान हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से प्रार्थना करे –

- **यजमान** **ॐ एतत् कल्याण युक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**
- **ब्राह्मण** **वाच्यताम्।**
- **यजमान** **ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।**
  वेद वृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥
  भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य माणस्य अमुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।
- **ब्राह्मण** **ॐ पुण्याहम्। ॐ पुण्याहम्। ॐ पुण्याहम्।**
  - **ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।**
    पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥
- **यजमान** **ॐ पृथिव्या मुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।**
  ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥
  भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य माणस्य अमुक कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।
- **ब्राह्मण** **ॐ कल्याणम्। ॐ कल्याणम्। ॐ कल्याणम्।**
  - **ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या ७ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।**
- **यजमान** **ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृताः।**
  सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रबुवन्तु नः॥
  भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य माणस्य अमुक कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

- **ब्राह्मण** ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्। ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्। ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।
ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम।
दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥
- **यजमान** ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा।
विनायक प्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥
भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य माणाय अमुक कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।
- **ब्राह्मण** ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
- **यजमान** ॐ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥
भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य माणस्य अमुक कर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।
- **ब्राह्मण** ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः।
  - ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण॥
- **यजमान** ॐ मृकण्डु सूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥
- **ब्राह्मण** ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः। ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः। ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।
  - ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या री रिषतायुर्गन्तोः॥
- **यजमान** ॐ शिव गौरी विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि॥
- **ब्राह्मण** ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः।
  - ॐ मनसः काम माकूतिं वाचः सत्यमशीय।
पशूना ७ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम् मयि स्वाहा॥
- **यजमान** प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः॥
- **ब्राह्मण** ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्। ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।
ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।

- **ॐ प्रजापते न त्वदेतान्न्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वय ममुष्य पिता सावस्य पिता व्यय ಆ स्याम पतयो रयीणाम् ಆ स्वाहा॥**

- **यजमान** — **आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।**
  श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥
  - **देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्तिगुरोर्गृहे।**
    एकलिङ्गेः यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम॥
- **ब्राह्मण** — **ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**
  - **ॐ प्रति पन्था मपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्।**
    येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु॥ ॐ पुण्याहवाचन समृद्धिरस्तु॥
- **यजमान** — अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुप विष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपति प्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।
- **दक्षिणाका संकल्प** — कृतस्य पुण्याह वाचन कर्मणः समृद्ध्यर्थं पुण्याह वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य दातु मह मुत्सृजे।
- **ब्राह्मण** — **ॐ स्वस्ति।**

आचार्य, ब्रह्मादि, ऋत्विग् वरणम्॥

- **संकल्प** — अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाहम् अस्मिन् कर्मणि शुभता सिध्यर्थम् आचार्य कर्म कर्तृत्वेन एभिः वरण सामग्रीभिः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं त्वाम वृणे।
- **प्रार्थना** — **ॐ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रा दीनां बृहस्पतिः।**
  तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥
  - **यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः॥**
    तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् ब्रह्माभव द्विजोत्तम्।
  - **अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिभिः।**
    ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्न मनसः सदा॥
  - **अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु पर निन्दकाः।**
    ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥
  - **ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनामखेभवन्।**
    यूयं तथामे भवत ऋत्विजो द्विज सत्तमः।

॥ अविघ्न पूजन ॥

- एक मिट्टी के पियाले में चावल भर कर उसपर हल्दी से अष्टदल बनाकर उस पर एक सुपारी मौली से लपेटकर रखे और षड्विनायक का आवाहन करें।

- **आवाहन**

1.	**ॐ मोदाय नमः**	**मोदम् आ. स्था. पू.**	4.	**ॐ दुर्मुखाय नमः**	**दुर्मुखम् आ. स्था. पू.**
2.	**ॐ प्रमोदाय नमः**	**प्रमोदम् आ. स्था. पू.**	5.	**ॐ अविघ्नाय नमः**	**अविघ्नम् आ. स्था. पू.**
3.	**ॐ सुमुखाय नमः**	**सुमुखम आ. स्था. पू.**	6.	**ॐ विघ्नहर्त्रे नमः**	**विघ्नहर्तारम आ. स्था. पू.**

- **प्रार्थना**

ॐ मोदश्च प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा।
अविघ्नो विघ्न हर्ता च षडैते विघ्ननायकाः ॥
अनया पूजया षड्विनायक प्रीयन्ताम् न मम्।

॥ तोरण मातृका (वन्दवार) पूजन ॥

- **आवाहन**

1.	**ॐ नन्दायै नमः**	**नन्दम् आ. स्था. पू.**	5.	**ॐ भार्गव्यै नमः**	**भार्गम् आ. स्था. पू.**
2.	**ॐ नन्दिन्यै नमः**	**नन्दिम् आ. स्था. पू.**	6.	**ॐ जयायै नमः**	**जयम् आ. स्था. पू.**
3.	**ॐ वाशिष्ठयै नमः**	**वशिष्ठम् आ. स्था. पू.**	7.	**ॐ विजयायै नमः**	**विजयम् आ. स्था. पू.**
4.	**ॐ वासुदेव्यै नमः**	**वासुम् आ. स्था. पू.**			

- **प्रार्थना**

ॐ नन्दा नन्दिनी वाशिष्ठयौ वासदेवी च भार्गवी।
जया च विजया चैव सप्तैता मातरः स्मृता ॥
अनया पूजया तोरण मातरः प्रीयन्ताम् न मम्।

॥ पंचगव्य करणम् ॥

- एक मिट्टी के पात्र में गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी पाचों चीजें कुश के द्वारा मिला दें।
- **गोमूत्र** — **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥**
- **गोबर** — **ॐ मानस्तोके तनये मानऽ आयुषि मानो गोषु मानोऽ अश्वेषु रीरिषः। मानो व्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्ह विष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥**
- **दूध** — **ॐ आप्याय स्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् भवा वाजस्य संगथे ॥**
- **दधि** — **ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत् प्रण आयु ७ षितारिषत् ॥**
- **घी** — **ॐ तेजोसि शुक्र मस्य मृतमसि धाम नामासि प्रियं। देवानां मना धृष्टन्देव यजन मसि ॥**
- **कुशोदक** — **ॐ देवस्त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥**
- **मंत्र** — निम्न मंत्रो के द्वारा कुश से पूजा स्थल, सामग्री एवं अपने उपर पंचगव्य छिडके।
  - **ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे।**
  - **यो वः शिव तमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः।**
  - **तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनय था च नः ॥**
  - **ॐ गो शरीरात् समुद्भूतं पंचगव्यं सुपावनम्। प्रोक्षणम् मण्डपस्यैव करिष्यामि सुरार्थकम् ॥**
  - **ॐ मण्डपाभ्यन्तरे देवाः सदेव्यः सगणाधिपः। तस्मात् संप्रोक्षणार्थेन सन्तुष्टा वरदाः सदा ॥**
  - **ॐ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः समन्वितम्। सर्वपाप विशुद्ध्यर्थम् पञ्चगव्यं पुनातु माम् ॥**
- **प्रार्थना** — **ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥**
  - देवाः आयान्तु। यातुधाना अपायान्तु। विष्णवे नमः। विष्णोः इमं सत्रं रक्षस्व।

॥ षोडश मातृका पूजनम् ॥

ॐ आत्मनःकुल-देवतायै नमः १७	ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३	ॐ देवसायै नमः ९	ॐ मेधायै नमः ५
ॐ तुष्ट्यै नमः १६	ॐ मातृभ्यो नमः १२	ॐ जयायै नमः ८	ॐ शच्यै नमः १२
ॐ पुष्ट्यै नमः १५	ॐ स्वाहायै नमः ११	ॐ विजयायै नमः ७	ॐ पद्मायै नमः ३
ॐ धृत्यै नमः १४	ॐ स्वधायै नमः ११	ॐ सावित्र्यै नमः ७	ॐ गौर्य्यै नमः २ ॐ गणेशाय नमः १

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं॥
गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

1. गणेश गौरी
2. पद्मा
3. शची
4. मेधा
5. सावित्री
6. विजया
7. जया
8. देव सेना
9. स्वधा
10. स्वाहा
11. मातरः
12. लोकमातरः
13. धृतिः
14. पुष्टिः
15. तुष्टिः
16. आत्मनः कुलदेवता

1. **गणेशम्**

ॐ गणानांत्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ७ हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति ७ हवामहे। वसो: मम आहमजानि गर्भधम् त्वमजासि गर्भधम्॥

- **ॐ समिपेमातृवर्गस्य सर्वविघ्न हरंसदा।**
  त्रैलोक्य पूजितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिम् आवाह्यामि स्थापयामि।

1. **गौरीम्**

ॐ आयं गौः पृश्नीरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

- **हिमाद्रि तनयां देविं वरदां दिव्य शंकरप्रियाम्।**
  लंबोदरस्य जननीं गौरिं आवाहयाम्यहम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः गोर्यै नमः। गौरीम् आवाह्यामि स्थापयामि।

2. **पद्माम्**

ॐ हिरण्यरूपा उषयो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च।
अरोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिञ्च मित्रोसिवरुणोसि॥

- **सुवर्णांभांपद्महस्तांविष्णो र्वक्षस्थल स्थितां।**
  त्र्यैलोक्य पूजितां देंविं पद्मां आवाहयाम्यहम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः पद्मायै नमः। पद्माम् आवाह्यामि स्थापयामि।

3. **शचीम्**

ॐ निवेशनः संगमनो वसूनां विश्वा रुपाभिचष्टे शचीभिः।
देव इव सविता सत्यधर्म्मन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्॥

- **दिव्यरुपां विशालाक्षीं शुचिं कुंडल धारिणीम् ।**
  रक्त मुक्ता द्यलंकारां शचि मावाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः शच्यै नमः । शचीम् आवाह्यामि स्थापयामि

4. मेधाम्

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥

- **विश्वेस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जर सेविताम् ।**
  बुध्दि प्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

5. सावित्रीम्

ॐ सविता त्वा सवाना ७ सुवतामग्निर्गृहपतीना ७ सोमो वनस्पतीनाम् ।
बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ॥

- **जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणव मातृकाम् ।**
  वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रिं स्थामयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः । सावित्रीम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

6. विजयाम्

ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ ऽउत ।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥

- **सर्वास्त्र धारिणीं देवीं सर्वाभरण भूषिताम् ।**
  सर्वदेव स्तुतां वन्द्या विजयां स्थापयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः विजयायै नमः । विजयाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

7. जयाम्

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य ।
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥

- **दैत्यरक्षःक्षय करीं देवानामभयप्रदां ।**
  गीर्वाण वंदिता देवीं जया मावाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः जयायै नमः । जयाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

8. देवसेनाम्

ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देवसेना नामभि भञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥

- **मयूर वाहनां देवीं खड्ग शक्ति धनुर्धराम ।**
  आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः । देवसेनाम् आवाह्यामि स्थापयामि

9. **स्वधाम्**

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः, पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः, प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन् पितरोऽ मीमदन्त, पितरोती तृपन्त पितरः, पितरः शुन्धध्वम् ॥

- **अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं प्रतिष्ठिता।**
  पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधा मावाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः स्वधायै नमः। स्वधाम् आवाह्यामि स्थापयामि

10. **स्वाहाम्**

ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा। दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥

- **हविर्गृहित्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।**
  तां दिव्यरुपां वरदां स्वाहा मावाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः। स्वाहाम् आवाह्यामि स्थापयामि

11. **मातृ**

ॐ आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्व ७ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूतएमि। दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा ७ शग्मां परिदधे भद्रं वर्णम पुष्यन ॥

- **आवाहयाम्यहं मातृः सकला लोक पूजिताः।**
  सर्वकल्याण रूपिण्यो वरदा दिव्य भूषिताः ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः। मातृम् आवाह्यामि स्थापयामि

12. **लोकमातृ**

ॐ रयिश्चमे रायश्चमे पुष्टंचमे पुष्टिश्चमे विभुचमे प्रभुचमे पूर्णंचमे पूर्णतरंचमे कुयवंचमे क्षितंचमे न्नंचमे क्षुच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥

- **आवाहये ल्लोकमातृर्जयंतीप्रमुखाःशुभाः।**
  नानाभीष्टप्रदाः शांता सर्वलोकहिता वहाः ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः। लोकमातृम् आवाह्यामि स्थापयामि

13. **धृतिम्**

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

- **नमःस्तुष्टिकरीं देवीं लोकानुग्रहकर्मणी।**
  स्वकामस्यच सिध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहं ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः धृत्यै नमः। धृतिम् आवाह्यामि स्थापयामि

14. **पुष्टिम्**

ॐ त्वाष्टा तुरीयो अभ्युत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना। द्विपदा धन्दा इन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः ॥

- **आवाहयाम्यहं पुष्टि जगद्विघ्न विनाशिनी ।**
  ज्ञात्वा पुष्टि करिं देवीं रक्षणाया ध्वरे मम ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः । पुष्टिम् आवाह्यामि स्थापयामि

15. तुष्टिम्

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥

- **सौम्यरुपे सुवर्णाभे विद्युज्वलीतकुंडले ।**
  धर्मतुष्टिकरीं देवीं मस्मिन्यज्ञे हितायवै ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः । तुष्टिम् आवाह्यामि स्थापयामि

16. आत्मनः कुलदेवताम्

ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।
चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥

- **त्वमात्मासर्व देवानां देहिनांमंत्र सर्वगां ।**
  वंशवृध्दि करीं देवीं कुलदेवीं प्रपूजयेत् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवताम् आवाह्यामि स्थापयामि
- **ऊपर लिखे देवताओं का पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजा करें ।**

॥ सप्तस्थल मातृका पूजनम् ॥

- षोडश मातृका के बगल में ७ खाना बनाकर सप्तस्थल मातृका का आवाहन करें ।

1. **ॐ ब्राह्मयै नमः** **ब्राह्मी आ. स्था.**
2. **ॐ माहेश्वर्यै नमः** **माहेश्वरी आ. स्था.**
3. **ॐ कौमार्यै नमः** **कौमारी आ. स्था.**
4. **ॐ वैष्णव्यै नमः** **वैष्णवी आ. स्था.**
5. **ॐ वाराह्यै नमः** **वाराही आ. स्था.**
6. **ॐ इन्द्राण्यै नमः** **इन्द्राणी आ. स्था.**
7. **ॐ चामुण्डायै नमः** **चामुण्डा आ. स्था.**

- ॐ क्षेमकर्त्री, तुष्टिकर्त्री, पुष्टिकर्त्री, वरदात्री भवत् ।

- **ऊपर लिखे देवताओं का पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजा करें ।**

॥ सप्तघृत मातृका (वसोर्धारा) पूजनम् ॥
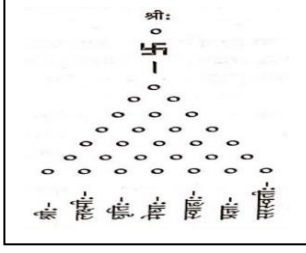
श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।
माग्ङल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥

1. **श्रीयम्**

ॐ मनसः काममाकुतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां ७ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥

- **ॐ सुवर्ण पद्महस्तां तां विष्णोर्वक्षस्थले स्थिताम् ।**
त्र्यैलोक्य वल्लभां देवी श्रियमावाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः श्रियै नमः। श्रियम् आवाह्यामि, स्थापयामि ।

2. **लक्ष्मीम्**

ॐश्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम ।
ईष्णन्निषाण मुं मइषाण सर्वलोकम् मइषाण ॥

- **ॐ शुभ लक्षण संपन्नां क्षीरसागर सम्भवाम् ।**
चंद्रस्य भगिनीं सौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

3. **धृतिम्**

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां ७ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

- **ॐ संसारधारणपरां धैर्य लक्षण संयुताम् ।**
सर्वसिद्धि करीं देवीं धृतिमावाहयाम्यहं ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः धृत्यै नमः । धृतिम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

4. **मेधाम्**

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥

- **ॐ सदसत्कार्यकरणंक्षमा बुद्धिविशालिनीम् ।**
मम कार्ये शुभकरीम् मेधामावाहयाम्यहं ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः मेधायै नमः । मेधाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

5. **पुष्टिम्**

ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।
चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥

- **ॐ सोमरुपां सुवर्णाभां विद्युज्वलित कुंडलाम् ।**
  जननीं पुष्टि करीणीं पुष्टिंमावाहयाम्यहं ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः । स्वाहाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

6. **श्रद्धाम्**

ॐ आयं गौः पृश्नीरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

- **ॐ भूतग्रासमिदं सर्व मजेन श्रद्धया कृतम् ।**
  श्रद्धया प्राप्यते सत्यं श्रद्धामावाहयाम्यहं ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः । प्रज्ञम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

7. **सरस्वतीम्**

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥

- **ॐ प्रणवस्यैव जननीं रसना ग्रस्थिताम् सदा ।**
  प्रगल्भ दात्रिम् चपलां वाणींमावाहयाम्यहं ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः । सरस्वतीम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

- **ऊपर लिखे देवताओं का पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजा करें ।**

॥ आयुष्य मंत्र ॥

- **ॐ यदा युष्यं चिरं देवाःसप्त कल्पान्त जीविषु ।**
  ददुस्तेना युषा युक्ता जिवेम शरदः शतम् ॥ १ ॥
- **दीर्घानागा नगा नद्यो अनन्ताः सप्तार्णवा दिशः ।**
  अनन्ते ना युषा तेन जीवेमः शरदः शतम् ॥ २ ॥
- **सत्यानि पंचभूतानि विनाश रहितानि च ।**
  अविनाश्या युषा ताद्वज्जीवेम् शरदः शतम् ॥ ३ ॥
- **आयुष्यं वर्चस्य ও रायस्पोषमौद्भिदम् ।**
  इद ও हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्राया विशता दुमाम् ॥ ४ ॥
- **नतद्रक्षा ও सि न पिशाचा स्तरन्ति देवानामोजः ।**
  प्रथमज ও ह्येतत् यो विभर्ति दाक्षायण ও हिरण्य ও
  स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः । स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ ५ ॥
- **यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ও शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।**
  तन्म आबध्नामि शत शारदा यायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥ ६ ॥
  आयुष्यम् । आयुष्यम् । आयुष्यम् । आयुष्यमाभिवृद्धिरस्तु ॥

॥ आभ्युदयिक नान्दीमुख श्राद्धम् ॥
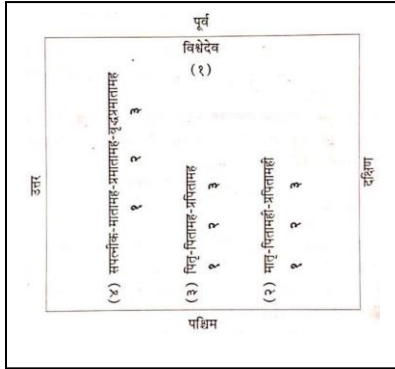
न स्वधाशर्मवर्मेति पितृनाम च चोच्चरेत् ।
न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः ॥
न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यमन्त्र विवर्जितम् ।
अस्मच्छब्दं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित् ॥

आचम्य प्राणानायम्य पवित्र धारणं के उपरान्त आभ्युदयिक नान्दीमुख षोडशमातृका के समक्ष पूर्वाभिमुख सव्य रहकर ही पितरों की अर्चना करने का विधान है।

- **संकल्पः** **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु, ॐ नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वराह कल्पे वैवस्वत् मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरत खण्डे आर्यावन्तार्गत ब्रह्मावर्तेक देशे पुण्यप्रदेशे वर्तमाने पराभव नाम संवत्सरे दक्षिणायने अमुक ऋतौ, महामांगल्यप्रदे मासानाम् मासोत्तमे अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक नक्षत्रे, अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, अमुक राशि स्थिते सूर्ये, अमुक राशि स्थिते देवगुरौ, अमुक गौत्रोत्पन्न, अमुक शर्मा / वर्मा अहं अमुक गोत्राणां मातृ-पितामहि- प्रपितामहि नाम अमुक देवीनां गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरुपाणां नान्दीमुखीनां तथा अमुक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम् अमुक देवानां वसु रुद्र आदित्य स्वरुपाणां नान्दीमुखानां तथा अमुक गोत्राणां मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहानाम् अमुक देवानां सपत्नीकानां अग्नि वरुण प्रजापति स्वरुपाणां नान्दीमुखानां प्रीतये अमुक कर्मणी निमित्तकं सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेव पूर्वकं संक्षिप्त संकल्प विधिना नान्दीमुख श्राद्धमहं करिष्ये ।**

- **पादप्रक्षालनम्** पादप्रक्षालन हेतु आसन पर जल छोड़े।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नांदिमुखः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दिः ।
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नांदिमुख्यः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दिः ।
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नांदिमुखाः ।**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दिः ।

4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहा: सपत्निका: नांदिमुखा: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दि: ।

- **आसनदानम्** विश्वेदेवा तथा सभी पूर्तों के लिए आसन दें।

1. **ॐ सत्यवसु सज्ञका विश्वेदेवानां नादिमुखिनां ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: आसनं सुखासनं नांदिश्राद्धे क्षणो क्रियेतां तथा प्राप्नोति भवान् प्राप्नुवाव: ॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि- प्रपितामहिनां नांदिमुखिनां ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: आसनं सुखासनं नांदिश्राद्धे क्षणो क्रियेतां तथा प्राप्नोति भवान् प्राप्नुवाव: ॥
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहानां नांदिमुखानां ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: आसनं सुखासनं नांदिश्राद्धे क्षणो क्रियेतां तथा प्राप्नोति भवान् प्राप्नुवाव: ॥
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नांदिमुखानां ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: आसनं सुखासनं नांदिश्राद्धे क्षणो क्रियेतां तथा प्राप्नोति भवान् प्राप्नुवाव: ॥

- **गंधादि दानम्** विश्वेदेवा तथा सभी पूर्तों के आसन पर जल, वस्त्र, यज्ञोपवित, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, सोपारी, आदि अर्पण करें।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चन: स्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामह्य: नांदिमुख्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चन: स्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चन: स्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चन: स्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥

- **भोजन निष्क्रय दानम्** भोजन निष्क्रय निमित्त दक्षिणा दें।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: दास्यमाण ब्राह्मण युग्म भोजन पर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रभुतं किंचित् हिरण्यदत्तं अमृत रुपेनस्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामहिभ्य: नांदिमुखिभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: दास्यमाण ब्राह्मण युग्म भोजन पर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रभुतं किंचित् हिरण्यदत्तं अमृत रुपेनस्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥
3. **ॐ पितृ - पितामह - प्रपितामहेभ्य नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: दास्यमाण ब्राह्मण युग्म भोजन पर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रभुतं किंचित् हिरण्यदत्तं अमृत रुपेनस्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥
4. **ॐ मातामह - प्रमातामह - वृद्ध प्रमातामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: दास्यमाण ब्राह्मण युग्म भोजन पर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रभुतं किंचित् हिरण्यदत्तं अमृत रुपेनस्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥

- **सक्षिर यव जलानि दद्यात** दुध, जव, जल मिलाकर अर्पण करें।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञका: विश्वेदेवा: नांदिमुखा: ।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयंताम् ॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपिताहिभ्य: नांदिमुखिभ्य: ।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयंताम् ॥
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहा: नांदिमुखा: ।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयंताम् ॥
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहा: सपत्नीका: नांदिमुखा: ।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयंताम् ॥

- **जलाऽक्षत पुष्प प्रदानम्** जल, पुष्प, चावल सभी आसनों पर चढायें।
  - **शिवा आप: सन्तु इति जलम् ।**
  - **सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम् ।**
  - **अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु इति अक्षतन् ।**

- **जलधारा दानम्** पितरों के लिए अँगुठे की ओर से पूर्वाग्र जलधारा दें।
  - **ॐ अघोरा: पितर: सन्तु: । इति पूर्वाग्रां चलधारां दद्यात् ।**

- **आशिष ग्रहणम्** यजमान हाथ जोड़कर प्राथना करें। ब्राह्मण कहें।

यजमान	ब्राह्मण
गोत्रंन्नोभि वर्धंतां।	**अभिवर्धंतांवो गोत्रम् ॥**
दातारोनोभि वर्धंतां।	**अभिवर्धंतांवो दातार: ॥**
संततिर्नोभि वर्धंतां।	**अभिवर्धंतांव:संतति: ॥**
श्रद्धाचनोमाव्यगमत।	**माव्यगमत्श्रद्धा ॥**
अन्नचनोबहुभवेत्।	**भवतुवोबह्वन्नम् ॥**
अतिथिंश्चलभेमहि।	**लभतांवोतिथय: ॥**
वेदाश्चनोभि वर्धंतां।	**अभिवर्धंतावो वेदा: ॥**
मायाचिष्मकंचन।	**मायाचध्वं कंचन ॥**
एता:आशिष:सत्या:संन्तु।	**सन्त्वेता: सत्या: आशिष: ॥**

- **दक्षिणा दानम्** मुन्नका, आँवला, यव, अदरक, मूल, तथा दक्षिणा लेकर।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे ॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामहिभ्य: नांदिमुखिभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे ॥
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहेभ्य: नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे ॥
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे ॥

- यजमान **ॐ उपास्मै गायता नर: पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ इयक्षते।**
  - **ॐ इडामग्ने पुरुद ꣳ स ꣳ सनिं गो: शश्वत्तम ꣳ हव मानाय साध। स्यान्न: सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥**
  - **अनेन नांदिश्राद्धं संपन्नं।**

- ब्राह्मण **सुसंपन्न।**

- प्रार्थना
  अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।
  ग्रहध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥१॥
  - अदुष्ट भाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिंदकाः ।
    ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥२॥
  - ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन् ।
    यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विसत्तमाः ॥३॥
  - अस्मिन् कर्मणि मे विप्राः वृता गुरुमुखादयः ।
    सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं कर्म यथोदितम् ॥४॥
  - अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ।
    सुप्रसादैः प्रकर्तव्यं कमदं विधिपूर्वकम् ॥५॥
- विसर्जनम्
  ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृता ऽ ऋतज्ञाः ।
  अस्य मद्धव: पिबत मादयद्धवं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानै: ॥
  - ॐ आमावाजस्य प्रसवो जगम्या देमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे ।
    आमागन्तां पितरा मातरा चामा सोमोऽमृतत्वेन गम्यात् ॥
- आस्मिन् नांदिश्राद्धे न्युनातिरिक्तं नांदिमुख प्रसादात्परिपुर्णोस्तु । अस्तु परिपुर्णतां ॥
- अनेन नांदिश्राद्धाख्येन कर्मण: नंदमुख नंदपितर: प्रियंतां वृद्धि: ॥

॥ चतु:षष्ठि योगिनी मण्डलम् पुजनम् ॥

महाकाल्यै नमः

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥

महालक्ष्म्यै नमः

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम । ईष्णन्निषाण मुम्मीषाण सर्वलोकम्मीषाण ॥

महा सरस्वत्यै नमः

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धियावसुः॥

- **ध्यानम्**

ॐ आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम् ।
योगाभ्यासेन सतुष्टा परं ध्यान समन्विता ॥

1. ॐ गजाननायै नमः
2. सिंह मुख्यै नमः
3. गृध्रास्यै नमः
4. काक-तुण्डिकायै नमः
5. उष्ट्रगीवायै नमः
6. हय-ग्रीवायै नमः
7. वाराह्यै नमः
8. शिरभाननायै नमः
9. उलूकिकायै नमः
10. शिवारावायै नमः
11. मायूर्यै नमः
12. विकटाननायै नमः
13. अष्ट-वक्त्रायै नमः
14. कोटराक्ष्यै नमः
15. कुब्जायै नमः
16. विकटलोचनायै नमः
17. शुष्कोदर्यै नमः
18. ललज्जिह्वायै नमः
19. श्व-दंष्ट्रायै नमः
20. वानराननायै नमः
21. रुक्षाक्ष्यै नमः
22. केकराक्ष्यै नमः
23. बृहत्-तुण्डायै नमः
24. सुरा-प्रियायै नमः
25. कपाल-हस्तायै नमः
26. रक्ताक्ष्यै नमः
27. शुक्यै नमः
28. श्येन्यै नमः
29. कपोतिकायै नमः
30. पाश-हस्तायै नमः
31. दण्ड-हस्तायै नमः
32. प्रचण्डायै नमः
33. चण्ड-विक्रमायै नमः
34. शिशुघ्न्यै नमः
35. पाश-हन्त्र्यै नमः
36. काल्यै नमः
37. रुधिर-पायिन्यै नमः
38. वसा-धयायै नमः
39. गर्भ-भक्षायै नमः
40. शव-हस्तायै नमः
41. आन्त्र-मालिन्यै नमः
42. स्थूल-केश्यै नमः
43. बृहत्-कुक्ष्यै नमः
44. सर्पास्यायै नमः
45. प्रेत-वाहनायै नमः
46. दन्द-शूक-करायै नमः
47. क्रौञ्च्यै नमः
48. मृग-शीर्षायै नमः
49. वृषाननायै नमः
50. व्यात्तास्यायै नमः
51. धूमनिः श्वासायै नमः
52. व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः
53. तापिन्यै नमः
54. शोषणीदृष्टयै नमः
55. कोटर्यै नमः
56. स्थूल-नासिकायै नमः
57. विद्युत्प्रभायै नमः
58. बलाकास्यायै नमः
59. मार्जार्यै नमः
60. कट-पूतनायै नमः
61. अट्टाट्टहासायै नमः
62. कामाक्ष्यै नमः
63. मृगाक्ष्यै नमः
64. मृगलोचनायै नमः

- ॐ भूभुर्वः स्वः चतु:षष्ठि योगिनी मण्डल देवताभ्यो नमः । आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।
- ऊपर लिखे देवताओं का पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजा करें ।

॥ क्षेत्रपाल मण्डल देवतानां पूजनम् ॥
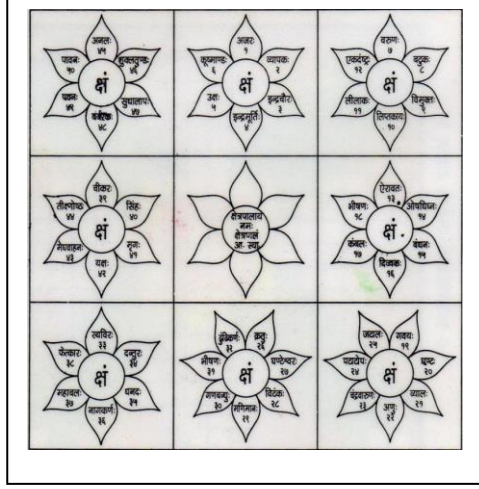
ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु।
ये अंतिरिक्षे ये दिवि तेभ्यो : सर्पेभ्यो नमः॥

यं यं यं यक्ष रूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं।
सं सं सं संहारमूर्ती शुभ मुकुट जटाशेखरम् चन्द्रबिम्बम्॥

दं दं दं दीर्घकायं विकृतनख मुखं चौर्ध्वरोयं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥

1. ॐ क्षेत्रपालाय नमः
2. अजराय नमः
3. व्यापकाय नमः
4. इन्द्रचौराय नमः
5. इन्द्रमूर्तये नमः
6. उक्षाय नमः
7. कूष्माण्डाय नमः
8. वरुणाय नमः
9. बटुकाय नमः
10. विमुक्ताय नमः
11. लिप्तकायाय नमः
12. लीलाकाय नमः
13. एकदंष्ट्राय नमः
14. ऐरावताय नमः
15. ओषधिघ्नाय नमः
16. बन्धनाय नमः
17. दिव्यकाय नमः
18. कम्बलाय नमः
19. भीषणाय नमः
20. गवयाय नमः
21. घण्टाय नमः
22. व्यालाय नमः
23. अणवे नमः
24. चन्द्रवारुणाय नमः
25. पटाटोपाय नमः
26. जटालाय नमः
27. क्रतवे नमः
28. घण्टेश्वराय नमः
29. विटंकाय नमः
30. मणिमानाय नमः
31. गणबन्धवे नमः
32. डामराय नमः
33. ढुण्ढिकर्णाय नमः
34. स्थविराय नमः
35. दन्तुराय नमः
36. धनदाय नमः
37. नागकर्णाय नमः
38. महाबलाय नमः
39. फेत्काराय नमः
40. चीकराय नमः
41. सिंहाय नमः
42. मृगाय नमः
43. यक्षाय नमः
44. मेघवाहनाय नमः
45. तीक्ष्णोष्ठाय नमः
46. अनलाय नमः
47. शुक्लतुण्डाय नमः
48. सुधालापाय नमः
49. बर्बरकाय नमः
50. पवनाय नमः
51. पावनाय नमः

- ॐ भूभुर्वः स्वः क्षेत्रपाल मण्डल देवताभ्यो नमः। क्षेत्रपालम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।
- ऊपर लिखे देवताओं का पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजा करें।

॥ नवग्रह मंण्डल पूजनम् ॥
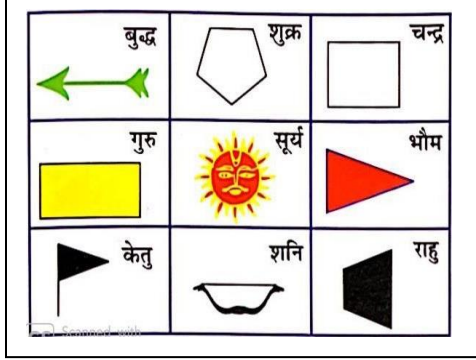
ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी
भानु शशि भूमि-सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतवः
सर्वे ग्रहा शांति करा भवंतु ॥

- १. सूर्यम् मण्डल के मध्य में लकडी - मदार फल - द्राक्ष
  - **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।**
    हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
  - **जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।**
    तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

  ॐ भूर्भुवः स्वः कलिंगदेशोद्भव काश्यपस गोत्र रक्त वर्ण भो सूर्य । इहागच्छ । इहतिष्ठ सूर्याय नमः । सूर्यम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

- २. चन्द्रम् मण्डल के अग्निकोण में लकडी - पलास फल - गन्ना
  - **ॐ इमं देवाऽअसपत्न ७ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा ॥**
  - **दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।**
    नमामि शशिनं सोम शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥

  ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयस गोत्र शुक्ल वर्ण भो चन्द्र । इहागच्छ । इहतिष्ठ चन्द्रमसे नमः । चन्द्रमसम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

- ३. भौमम् मण्डल के दक्षिण में लकडी - खैर फल - सोपारी
  - **ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम् । अपा ७ रेता ७ सि जिन्वति ॥**
  - **धरणी गर्भसंभूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम् ।**
    कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥

  ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजस गोत्र रक्त वर्ण भो भौम । इहागच्छ । इहतिष्ठ भौमाय नमः । भौमम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि

- ४. बुधम् — मण्डल के ईशान कोण में — लकडी - चिचडी — फल - नारंगी
  - **ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ७ सृजेथा मयं च।**
    अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥
  - **प्रियंगु कलिका श्यामं रुपेण प्रतिमं बुधम्।**
    सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

    ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयस गोत्र हरित वर्ण भो बुध। इहागच्छ। इहतिष्ठ बुधाय नमः। बुधम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
- ५. बृहस्पतिम् — मण्डल के उत्तर में — लकडी - पीपल — फल - निम्बु
  - **ॐ बृहस्पतेऽ अति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।**
    यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजा त तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥
  - **देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन सन्निभम्।**
    बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम्॥

    ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव अंगिरस गोत्र पीत वर्ण भो बृहस्पते। इहागच्छ। इहतिष्ठ बृहस्पतये नमः। बृहस्मतिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
- ६. शुक्रम् — मण्डल के पूर्व में — लकडी - गूलर — फल - बीजोरु
  - **ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमम्प्रजापतिः।**
    ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपान ७ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोऽमृतं मधु॥
  - **हिम कुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।**
    सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

    ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवस गोत्र शुक्ल वर्ण भो शुक्र। इहागच्छ। इहतिष्ठ शुक्राय नमः। शुक्रम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
- ७. शनिम् — मण्डल के पश्चिम में — लकडी - शमी — फल - कमल गट्टा
  - **ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्त्रवन्तु नः॥**
  - **नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजं।**
    छाया मार्तण्ड संभूतं तन्नमामि शनैश्चरम्॥

    ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपस गोत्र कृष्ण वर्ण भो शनैश्चर। इहागच्छ। इहतिष्ठ शनैश्चराय नमः। शनैश्चरम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि
- ८. राहुम् — मण्डल के नैर्ऋत्य कोण में — लकडी – दुब — फल - नारियल
  - **ॐ कयानश्चित्र ऽ आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥**
  - **अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।**
    सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

    ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठीनस गोत्र कृष्ण वर्ण भो राहो। इहागच्छ। इहतिष्ठ राहवे नमः। राहुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

- ९. केतुम् — मण्डल के वायव्य कोण में — लकडी - कुशा — फल - दाडिम
  - **ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥**
  - **पलाश पुष्प संकाशं तारका ग्रह मस्तकम्।**
    रौद्रं रौद्रत्मकं घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम् ॥
    ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिस गोत्र कृष्ण वर्ण भो केतु। इहागच्छ। इहतिष्ठ केतवे नमः। केतुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

अधिदेवता स्थापनम्

- विशेष पूजा, यज्ञ, अनुष्ठान, इत्यादि में नवग्रहों की स्थापना के उपरान्त सूर्य आदि ग्रहों के दाहिने (दक्षिण) की तरफ अधिदेवताओं का आवाहन एवं स्थापन करें।

- १. ईश्वरम् (सूर्य के दायें) — **ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम्।**
  उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
- २. उमाम् (चंद्र के दायें) — **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रो पार्श्व नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।**
  इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥
- ३. स्कन्दम् (मंगल के दायें) — **ॐ यद क्रन्दः प्रथमं जायमानः उद्यन्तसमुद्रा दुत वा पुरीषात्।**
  श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातंते अर्वन ॥
- ४. विष्णुम् (बुध के दायें) — **ॐ विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप् त्रेस्थो विष्णोः**
  स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥
- ५. ब्रह्माणम् (गुरु के दायें) — **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।**
  सबुध्न्या उपमा ऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसश्च विवः ॥
- ६. इन्द्रम् (शुक्र के दायें) — **ॐ सजोष इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्राहा शूर विद्वान्।**
  जहि शत्रु२रप मृधो नुदस्वाथा भयं कृणुहि विश्वतो नः ॥
- ७. यमम् (शनि के दायें) — **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा।**
  स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म पित्रो ॥
- ८. कालम् (राहु के दायें) — **ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽ उन्नयामि।**
  समापो ऽ अद्भिरग्मत समोषधी भिरोषधीः ॥
- ९. चित्रगुप्तम् (केतु के दायें) — **ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥**

- **प्रत्यधि देवता स्थामनम्**
  - नवग्रह मण्डल पर अधिदेवताओं की स्थापना के उपरान्त बायें तरफ प्रत्यधिदेवताओं का आवाहन एवं स्थापन करें।
  - १. अग्निम् (सूर्य के बायें) — **ॐ अग्निदूतं पुरो दधे हव्यवाहमु प ब्रुवे। देवाँ २ ऽआसादयादिह॥**
  - २. आपः (चन्द्र के बायें) — **ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः। तस्माऽ अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः॥**
  - ३. पृथ्वीम् (मंगल के बायें) — **ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म स प्रथाः॥**
  - ४. विष्णुम् (बुध के बायें) — **ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ॳ सुरे स्वाहा॥**
  - ५. इन्द्रम् (गुरु के बायें) — **ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्र ॳ हवे हवे सुहव ॳ शूरमिन्द्रम्। ह्वायामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ॳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥**
  - ६. इन्द्राणीम् (शुक्र के बायें) — **ॐ अदित्यै रास्ना सीन्द्राण्या ऽउष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीष्व॥**
  - ७. प्रजापतिम् (शनि के बायें) — **ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वय ॳ स्याम पतयो रयीणाम्॥**
  - ८. सर्प (राहु के बायें) — **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥**
  - ९. ब्रह्मा (केतु के बायें) — **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥**

- **पंच लोकपाल देवता पूजनम्**
  - १. गणेश (राहु के उत्तर) — **ॐ गणानान्त्वा गणपतिॳ हवामहे प्रियाणान्त्वां प्रियपतिॳ हवामहे निधी नान्त्वा निधिपति ॳहवामहे व्वसो मम आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधं॥**
  - २. दुर्गा (शनि के उत्तर) — **ॐ अंबेऽ अंबिकेऽ अम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥**
  - ३. वायु (सूर्य के उत्तर) — **ॐ आ नो नियुद्धिःशतिनीभिरध्वर ॳ सहश्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः॥**
  - ४. आकाश (शुक्र के पूर्व) — **ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्धिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥**
  - ५. अश्विनी (ग्रह के उत्तर) — **ॐ यावां कशा मधु मत्य अश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षत स्वाहा॥**

- **दशदिक्पाल पूजनम्**
  - १. इन्द्र (मण्डल के पूर्व) — **ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ᳬ हवे हवे सुहव ᳬशूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ᳬ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥**
  - २. अग्नि (मण्डल के अग्नि) — **ॐ त्वन्नोऽ अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च बन्ध । त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ᳬ रक्षमाणस्तव व्रते ॥**
  - ३. यम (मण्डल के दक्षिण) — **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म पित्रो ॥**
  - ४. नैऋत्य (मण्डल के नैर्ऋत्य) — **ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छस्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ- सातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥**
  - ५. वरुण (मण्डल के पश्चिम) — **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणे हबोध्युरूश ᳬ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥**
  - ६. वायु (मण्डल के वायव्य) — **ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ᳬ सहस्त्रिणी भिरुपया हियज्ञम् । वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥**
  - ७. सोम (मण्डल के उत्तर) — **ॐ वय ᳬ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥**
  - ८. ईशान (मण्डल के ईशान) — **ॐ तमीशानं जगतस् तस्थु षस्पतिं धियञ्जिन्वम से हूमहे वयं । पूषानो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये ॥**
  - ९. ब्रह्मा (ईशान - पूर्व) — **ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यश ᳬ सते स्तुवते धायि वज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवाः ॥**
  - १०. अनन्त (नैर्ऋत्य - पश्चिम) — **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः सर्मसप्रथाः ॥**
    - **ऊपर लिखे देवताओं का पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजा करें ।**

॥ इन्द्रध्वज / हनुमत् पूजनम् / ध्वजा स्थापनम् ॥

- आवाहनम् — **ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ᳬ हवे हवे सुहव ᳬ सुर मिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रम् पुरुहूत मिन्द्र ᳬ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥**
  - वायव्य कोण में हनुमान जी एवं ध्वजा का पंचोपचार पूजन करें ।
  - **अनया पूजया इन्द्रध्वज देवता प्रीयतां न मम् ।**
- प्रार्थना — **ॐ इमं रक्तवर्णन्तु तथा हस्त सुविस्तृतम् । इन्द्रध्वजं चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥**
  - **अमुमिन्द्र ध्वजं चित्रं सर्व विघ्न विनाशकम् । अस्मिन मण्डप पार्श्वे तु स्थापयामि सुरार्चने ॥**

॥ सर्वतोभद्र मण्डल देवतानां पूजनम् ॥
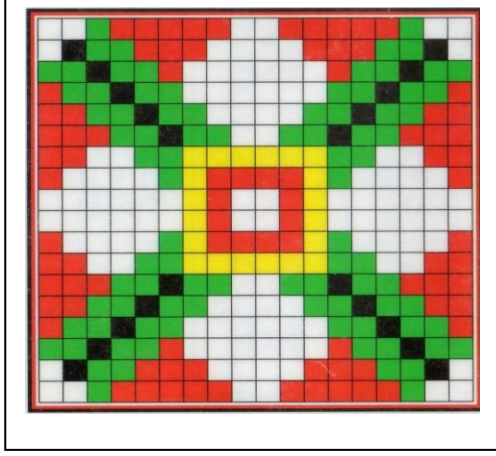
ॐ इमं रक्तवर्णन्तु तथाहस्त सुविस्तृतम् ।
इद्रध्वजं चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥
अमुमिन्द्रध्वजं चित्रं सर्व विघ्न विनाशकम् ।
अस्मिन् मण्डप पार्श्वे तु स्थापयामि सुरार्चने ॥

1. ॐ ब्रह्मणे नम:
2. सोमाय नम:
3. ईशानाय नम:
4. इन्द्राय नम:
5. अग्नये नम:
6. यमाय नम:
7. नैर्ऋतये नम:
8. वरुणाय नम:
9. वायवे नम:
10. अष्टवसुभ्यो नम:
11. एकादश रुद्रेभ्यो नम:
12. द्वादशादित्येभ्यो नम:
13. अश्विभ्यां नम:
14. सपैतृक-विश्वेदेव नम:
15. सप्तयक्षेभ्यो नम:
16. भूतनागेभ्यो नम:
17. गन्धर्वाप्सेरोभ्यो नम:
18. स्कंदाय नम:
19. नन्दीश्वराय नम:
20. शूलमहाकालाभ्यां नम:
21. दक्षादि सप्तगणेभ्यो नम:
22. दुर्गायै नम:
23. विष्णवे नम:
24. स्वधायै नम:
25. मृत्यु रोगाभ्यां नम:
26. गणपतये नम:
27. अद्भ्यो नम:
28. मरुदभ्यो नम:
29. पृथिव्यै नम:
30. गंगादि नंदीभ्यो नम:
31. सप्तसागरेभ्यो नम:
32. मेरवे नम:
33. गदायै नम:
34. त्रिशूलाय नम:
35. वज्राय नम:
36. शक्तये नम:
37. दण्डाय नम:
38. खड्गाय नम:
39. पाशाय नम:
40. अंकुशाय नम:
41. गौतमाय नम:
42. भरद्वाजाय नम:
43. विश्वामित्राय नम:
44. कश्यपाय नम:
45. जमदग्नये नम:
46. वसिष्ठाय नम:
47. अत्रये नम:
48. अरुन्धत्यै नम:
49. ऐन्द्रै नम:
50. कौमार्यै नम:
51. ब्राह्मयै नम:
52. वाराह्यै नम:
53. चामुण्डायै नम:
54. वैष्णव्यै नम:
55. माहेश्वर्यै नम:
56. वैनायक्यै नम:

- ॐ भूभुर्वः स्व: सर्वतोभद्र मण्डल देवताभ्यो नम: । सर्वतोभद्रम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।
- ऊपर लिखे देवताओं का पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजा करें ।

॥ गृह शिख्यादि वास्तु मण्डल पूजनम् ॥
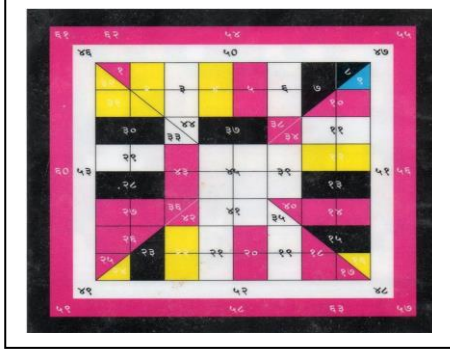
ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

नमस्ते वास्तु पुरुषाय भूशय्या भिरत प्रभो ।
मद्गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

स्थापना हेतु आ. स्था. पू. एवं स्वाहाकार हेतु स्वाहा का प्रयोग करें।

1. ॐ शिखिने नमः
2. ॐ पर्जन्याय नमः
3. ॐ जयन्ताय नमः
4. ॐ कुलिशायुधाय नमः
5. ॐ सूर्याय नमः
6. ॐ सत्याय नमः
7. ॐ भृशाय नमः
8. ॐ आकाशाय नमः
9. ॐ वायवे नमः
10. ॐ पूष्णे नमः
11. ॐ वितथाय नमः
12. ॐ गृहक्षताय नमः
13. ॐ यमाय नमः
14. ॐ गन्धर्वाय नमः
15. ॐ भृंगराजाय नमः
16. ॐ मृगाय नमः
17. ॐ पितृभ्यो नमः
18. ॐ दौवारिकाय नमः
19. ॐ सुग्रीवाय नमः
20. ॐ पुष्पदंताय नमः
21. ॐ वरुणाय नमः
22. ॐ असुराय नमः
23. ॐ शोषाय नमः
24. ॐ पापाय नमः
25. ॐ रोगाय नमः
26. ॐ अहये / नागाय नमः
27. ॐ मुख्याय नमः
28. ॐ भल्लाटाय नमः
29. ॐ सोमाय नमः
30. ॐ सर्पाय / उरगाय नमः
31. ॐ अदितये नमः
32. ॐ दित्यै नमः
33. ॐ आपाय / अद्भयो नमः
34. ॐ सावित्राय नमः
35. ॐ जयाय नमः
36. ॐ रुद्राय नमः
37. ॐ अर्यम्णे नमः
38. ॐ सवित्रे नमः
39. ॐ विवस्वते नमः
40. ॐ बिबुधाधिपाय नमः
41. ॐ मित्राय नमः
42. ॐ राजयक्ष्मणे नमः
43. ॐ पृथ्वीधराय नमः
44. ॐ आपवत्साय नमः
45. ॐ ब्रह्मणे नमः
46. ॐ चरक्यै नमः
47. ॐ विदार्यै नमः
48. ॐ पूतनायै नमः
49. ॐ पापराक्षस्यै नमः
50. ॐ स्कंदाय नमः
51. ॐ अर्यम्णे नमः
52. ॐ जृम्भकाय नमः
53. ॐ पिलिपिच्छाय नमः
54. ॐ इंद्राय नमः
55. ॐ अग्नये नमः
56. ॐ यमाय नमः
57. ॐ निर्ऋतये नमः
58. ॐ वरुणाय नमः
59. ॐ वायवे नमः
60. ॐ सोमाय / कुबेराय नमः
61. ॐ ईशानाय / ईश्वराय नमः
62. ॐ ब्रह्मणे नमः
63. अनन्ताय नमः
64. ॐ तलवासिने नमः

- ॐ भूभुर्वः स्वः शिख्यादि मण्डल देवता सहित वास्तुपूरुषाय नमः। आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।
- ऊपर लिखे देवताओं का पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजा करें।

- **प्राणप्रतिष्ठा**

ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७
समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥

- अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन॥

- **आह्वान**

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ७ सर्व तस्पृत्वाऽ त्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम्॥

- आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं संनिधौ भव॥ (आह्वान हेतु पुष्प अर्पण करें)

- **आसन**

ॐ पुरुषऽएवेदं ७ सर्व य्यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृ तत्वस्ये शानो यदन्नेना तिरोहति॥

- रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥ (आसन हेतु अक्षत अर्पण करें)

- **पाद्य**

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवि॥

- उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम्।
पाद प्रक्षाल नार्थाय दत्तं ते प्रति गृह्यताम्॥ (पाद्य हेतु जल अर्पण करें)

- **अर्घ्य**

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽ स्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्ष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि॥

- अर्घ्य गृहाण देवश गन्ध पुष्पाक्षतैः सह।
करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्य नमोस्तु ते॥ (अर्घ्य हेतु जल, गन्धाक्षतपुष्प अर्पण करें)

- **आचमन**

ॐ ततो विराड जायत विराजोऽ अधि पूरुषः।
स जातोऽ अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥

- सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥ (आचमन हेतु जल अर्पण करें)

- **स्नान**

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्व हुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये॥

- ॐ मन्दाकिन्या समानीतैः हेमाम्भोरुह-वासितैः।
स्नानं कुरुष्व देवेशि, सलिलं च सुगन्धिभिः॥ (स्न्ना हेतु जल अर्पण करें)

- **दुग्ध स्नान**

ॐ पय: पृथिव्याम् पय ओषधीषु पयो दिव्यन् तरिक्षे पयोधा: ।
पयस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम ॥

- कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञ हेतुश्च पय: स्नानाय गृह्यताम् ॥ (दूध से स्नान करायें)

- **दधि स्नान**

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिन: ।
सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु ७ षि तारिषत् ॥

- पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानितं मया देव स्ननार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ (दधि से स्नान करायें)

- **घृत स्नान**

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम् वस्य धाम ।
अनुष्वधमा वह मदयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥

- नवनीत समुत्पन्नं सर्व संतोष कारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ (घी से स्नान करायें)

- **मधु स्नान**

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव: । माद्धवीर्न: सन्त्वोषधी: ।
मधु नक्त मुतो षसो मधुमत् पार्थिव ७ रज:। मधु द्यौरस्तुन: पिता ।
मधुमान्नो व्वनस्पतिर् मधुमाँ२ अस्तु सूर्य:। माध्वीर्गावो भवन्तु न: ॥

- पुष्प रेणु समुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेज: पुष्टिकरं दिव्यं स्ननार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ (शहद से स्नान करायें)

- **शर्करा स्नान**

ॐ अपा ७ रसमुद् वयस ७ सूर्ये सन्त: ७ समाहितम । अपा ७ रसस्य यो रसस्तम् वो गृह्णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो सिन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

- इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका ।
मलापहारिका दिव्य स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ (सक्कर से स्नान करायें)

- **पंचामृत स्नान**

ॐ पंच नद्य: सरस्वती मपि यान्ति सस्रोतस: ।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित ॥

- पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् ।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम् ॥ (पंचामृत से स्नान करायें)

- **गन्धोदक स्नान**

ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शु: पृच्यतां परुषा परु: ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युत: ॥

- त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ (इत्र से स्नान करायें)

- शुद्धोदक स्नान

ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्यऽ अश्विना:। श्वेत: श्वेताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ॥

- **शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गंगाजल समं स्मृतम् ।**
समर्पितं मया भक्त्या शुद्ध स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ (शुद्ध जल से स्नान करायें)

- अभिषेक स्नान

देवताओं का पुरुषुक्त श्रीसुक्त या अन्य मंत्रो द्वारा अभिषेक कर सकते हैं।

- वस्त्र

ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे ।
मयो पपादि ते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥

- **ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ ऋच: सामानि जज्ञिरे ।**
छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्माद जायत ॥ (वस्त्र चढायें)

- उपवस्त्र

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्व: ।
वासोग्ने विश्वरूप ७ संव्ययस्व विभावसो ॥

- **उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।**
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥ (उपवस्त्र चढायें)

- यज्ञोपवित

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज: ॥

- **ॐ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादत: ।**
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा ज्जाताऽ अजावय: ॥ (यज्ञोपवित पहनायें)

- चंदन

तँ यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषन् जातमग्रत: ।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥

- **ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।**
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ (चन्दन चढायें)

- अक्षत

ॐ अक्क्षन्न मीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधुषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान् नविन्द्रतेहरी ॥

- **अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता: सुशोभिता : ।**
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ (चावल चढायें)

- सुगन्ध द्रव्य

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्द्धनम ।
उर्वारुक मिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ॥

- **ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शु: पृच्यतां परुषा परु: ।**
गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽ अच्च्युत: ॥ (इत्र चढायें)

- **आभुषण**

  ॐ युवं तमिन्द्रा पर्वता पुरोयुधा यो नः एतन्यादप तन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम् । दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ॥

  - ॐ सौभाग्य सूत्रम वरदे सुवर्ण मणि संयुतम।
    कण्ठे बघ्नामि देवेशि सौभाग्यम देहि मे सदा ॥ (आभुषण चढायें)

- **काजल**

  ॐ चक्षुर्भ्याम कज्जलम रम्यम सुभगे शान्ति कारकम ।
  कर्पूर्ज्योति समुत्पन्नम गृहाण परमेश्वरि ॥

- **पुष्प / पुष्पमाला**

  ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धवं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
  अश्श्वाऽ इव सजित्त्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

  - माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
    मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ (पुष्प चढायें)

- **दुर्वा**

  ॐ काण्डात काण्डात प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
  एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥

  - तृणकान्त मणि प्रख्य हरित अभिः सुजातिभिः।
    दूर्वाभिराभिर्भवतीम पूजयामि महेश्वरि ॥ (दुर्वा चढायें)

- **बिल्वपत्र**

  ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यरय चाहनन्यायच ।

  - ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम ।
    त्रिजन्मपाप संहारमेक बिल्वं शिवार्पणम ॥ (बेलपत्र चढायें)

- **सौभाग्य द्रव्य**

  ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुन् ज्यावा हेतिम् परिबाधमानः ।
  हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान पुमा ७ सं परिपातु विश्वतः ॥

  - अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दन मेव च ।
    अबीरेणर्चितो देव अतः शान्ति प्रयच्छमे ॥ (अबीर-गुलाल चढायें)

- **हरिद्राचूर्ण**

  ॐ हरिद्रा रंचिते देवि ! सुख सौभाग्य दायिनी।
  तस्मात त्वाम पूज्याम यत्र सुखम शान्तिम प्रयच्छ में ॥

- **कुंकुम**

  ॐ कुंकुमं कामना दिव्यं कामना काम सम्भवम ।
  कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर ॥ (कुंकुम चढायें)

- **सिन्दूर**

  ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वात प्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
  घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥

ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥ (सिन्दुर चढायें)

- **धुप**

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं व्वयं धूर्वामः ।
देवानामसि वह्नितमं ७ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

▪ ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढयो गन्धः उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ (धुप दिखायें)

- **दीप**

ॐ अग्निर्ज्योतिः ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्योव्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ।
ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्योतिः स्वाहा ॥

▪ साज्यं च वर्ति संयुक्तम वह्निना योजितम् मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह ॥ (दीप दिखायें)

- **नैवद्य**

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥

▪ शर्कराखण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च ।
आहारं भक्ष्य भोज्यञ्च नैवेद्यं प्रति गृह्यताम ॥ (प्रसाद चढायें)

प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा ॥

- **ऋतुफल**

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ ह सः ॥

▪ इदं फलं मया देव स्थापितम् पुरतस्तव ।
तेन मे सफला वाप्तिर् भवेत जन्मनि जन्मनि ॥ (फल चढायें)

- **ताम्बूल**

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥

▪ ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ।
एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ (पान-सुपारी चढायें)

- **दक्षिणा**

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥

▪ हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलद मत्तः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ (दक्षिणा चढायें)

- कपूर आरती
  ॐ आ रात्रि पार्थिव ७ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
  दिवः सदा ७ सि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः ॥
  - **इद ७ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ७ सर्वगण ७ स्वस्तये ।**
    आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोक सन्य भयसनिः ।
    अग्निः प्रजां बहुलं मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽ अस्मासु धत्त ॥
  - **अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता,**
    वसवो देवता रुद्रा देवता, दित्या देवता मरुतो देवता,
    विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥
  - **कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।**
    सदा बसन्तं हृदया रबिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥
- जल आरती
  ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
  शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः
  शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

॥ अग्नि स्थापन पूजनम् ॥

- **कुशकण्डिका / पंचभूसंस्कार / अग्नि स्थापनम्**
  - **संकल्प** अस्मिन कुण्डे वास्तुशान्ति कर्मणि पञ्चभूसंस्कार पूर्वकम् अग्नि प्रतिष्ठां करिष्ये ।
  - **परिसमूह्य** दाहिने हाथ में कुशाएँ लेकर तीन बार पश्चिम से पूर्व की ओर या दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ते हुए निम्न मन्त्र द्वारा बटोरें, बाद में कुश को कुण्ड के इशानकोण में फेक दें।
    - **ॐ दर्भैः परिसमूह्य, परिसमूह्य, परिसमूह्य ।**
    - **ॐ यद्देवा देवहेडनन्देवासश्चकृमा वयम् ।**
      अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ७ हसः॥
    - **यदि दिवा यदि नक्तमेना ७ सि चकृमा वयम्म ।**
      वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ७ हसः ॥
    - **यदि जाग्रद्यदि स्वप्न ऐन ७ सि चकृमा वयम्म ।**
      सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ७ हसः ॥
  - **उपलेपनम्** बुहारे हुए स्थल पर गोमय (गाय के गोबर) से पश्चिम से पूर्व की ओर या दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ते हुए लेपन करें और निम्न मन्त्र बोलते रहें ।

- **ॐ गोमयेन उपलिप्य, उपलिप्य, उपलिप्य ।**
- **ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषुरीरिषः।**
  मानोव्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥

- **उल्लेखनम्** लेपन हो जाने पर उस स्थल पर स्रुवा मूल से तीन रेखाएँ पश्चिम से पूर्व की ओर या दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ते हुए निम्न मन्त्र बोलते हुए खींचे ।
  - **ॐ स्रुवमूलेन उल्लिख्य, उल्लिख्य, उल्लिख्य ।**
  - **खादिरं स्फ्यं प्रकल्प्याथ तिस्रो रेखाश्च पंच वा ।**
    स्थण्डिलोल्लेखनं कुर्यात्स्त्रुवेण च ॥

- **उद्धरण** रेखांकित किये गये स्थल के ऊपर की मिट्टी अनामिका और अङ्गुष्ठ के सहकार से निम्न मन्त्र बोलते हुए पूर्व या ईशान दिशा की ओर फेंके ।
  - **ॐ अनामिकाङ्गुष्ठेन उद्धृत्य, उद्धृत्य, उद्धृत्य ।**
  - **विचरन्ति पिशाचा ये आकाशस्था:सुखासनाः ।**
    तेभ्य:संरक्षणार्थाय उद्धृतं चैव कारयेत् ॥

- **अभ्युक्षण** पुनः उस स्थल पर निम्न मन्त्र बोलते हुए जल छिड़कें ।
  - **ॐ उदकने अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य ।**
  - **गङ्गादि सर्व तीर्थेषु समुद्रेषु सरित्सु च ।**
    सर्वतश्चाप आदाय अभ्युक्षेच्च पुनःपुनः ॥

- **अग्नि स्थापन** वेदी पर बीच में एक त्रिकोण बनाकर उसके बीच में कुंमकुम से **" रं "** लिख दे ।
  - किसी सौभाग्यवती स्त्री (लोकाचार में बहन आदि पूज्य स्त्रियां) से कांसे, तांबे या मिट्टी के पात्र में अग्नि मंगाए ।
  - हवनकर्ता स्वयं अग्नि पात्र को वेदी या कुण्ड के उपर तीन बार घुमाकर अग्निकोण में रखे अग्नि में से क्रव्यादांश निकाल कर नैऋत्य कोण में डाले दे तदन्तर अग्निपात्र को स्वाभिमुख करते हुए **"हुं फट्"** कहते हुए अग्नि को वेदी में स्थापित करें ।

- **अग्निं मंत्र** **ॐ अग्निं दूतं पूरो दधे हव्यवापमुहब्रुबे । देवोँ२ आ सादयादिह ॥** ॐ अग्नये नमः ।
  - थाली में द्रव्य - अक्षत छोड कर अग्नि जिससे लिये हैं उन्हें देदें ।

- **अग्नि आवाहन** **ॐ रक्त माल्याम्बर धरं रक्त-पद्मासन-स्थितम् ।**
  स्वाहा स्वधा वषट्कारै रंकितं मेष वाहनम्॥
  - **शत मंगलकं रौद्रं वह्नि मावाह याम्यहम् ।**
    त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिर मितद्युते ॥
    आगच्छ भगवन्नग्ने वेद्यामस्मिन सन्निधो भव ।

- **मुद्राः प्रदर्शयेत्** — **भो अग्ने त्वम् आवाहितो भव। भो अग्ने त्वं संन्निरुद्धो भव। भो अग्ने त्वं सकलीकृतो भव॥ भो अग्ने त्वग् अवगुण्टितो भव। भो अग्ने त्वम् अमृतीकृतो भव। भो अग्ने त्वं परमीकृतो भव॥ इति ताः ताः मुद्राः प्रदर्श्य।**
  - ॐ भूर्भुवः स्वः वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरः भूमिमातः वरुणापितः पश्चिम चरण, पूर्व शिर-स्कन्ध-ऊर्ध्व पाद, पाताल दृष्टि, गोचर मेषध्वज प्रांमुख अग्ने त्वं स्वागतो भव॥

- **अग्नि पूजन** — चावल लेकर २-२ दाना अग्नि पर छिडके - सप्तजिह्वा का आवाहन करें।

१. कनकायै नमः	**४. उदरिण्यायै नमः**	**७. अतिरिक्तायै नमः**
२. रक्तायै नमः	**५. सुप्रभायै नमः**	
३. कृष्णायै नमः	**६. बहुरूपायै नमः**	

- **ध्यायेत्** — **ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्या२ आविवेश।**

- **प्रतिष्ठा** — **ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्जस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ :।**
  - ॐ शतमङ्गल नामान्गे सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।
  - ॐ भूर्भुव: स्व: शतमंगल नाम्ने वैश्वानराय नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पूष्पाणि सम.।
  - इति कुण्डस्य नैर्ऋत्य कोणे मध्ये वा अग्निं सम्पूज्य।
  - अनया पूजया अग्नि देवता प्रीयतां न मम।

- **प्रार्थना** — **ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनं। हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतोमुखं॥**

- **ब्राह्मण वरण** — अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः, अमुक नामाहं अस्मिन वास्तुशान्ति कर्मणि शुभता सिद्धयर्थम यथानाम गोत्रान् शर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे।

॥ कुशकण्डिका ॥

- **ब्रह्मा वरण** — अग्नि के दक्षिण दिशा में पान के उपर ब्रह्मा के लिये कुशा में गांठ लगाकर रखदें।
  - अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनम् । दक्षिणे तत्र ब्रह्मोपवेशनम् । यावत् कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव भवामि इति प्रतिवचनम् ।
- **प्रणीता पात्र स्थापन** — अग्नि के उत्तर में कुश के आसन पर प्रणीता और प्रोक्षणी पात्र में जल भर कर रखें। उत्तरतः प्रणीतासनम् । वायव्यां द्वितीयमासनम् । ब्रह्मानुज्ञात वामकरणे प्रणीतां संगृह्य दक्षिणकरणे जलं प्रपूर्य भूमौ वायव्यासने निधाय आलभ्य उत्तरतोऽग्ने स्थापयेत् । बहिर्प्रददक्षिणग्ने।
- **परिस्तरणम्** — तच्च त्रिभिः दर्भैः एकमुष्टय्या वा तच्च प्राक् उदगग्रे। दक्षिणतः प्रागग्रैः। प्रत्यक् उदग् उग्रैः उत्तरतः प्राग् अग्रैः।
  - सर्व प्रथम कुश का चार भाग कर पहले अग्निकोण से ईशानकोण तक उत्तराग्र बिछावे। दसुरे भाग को ब्रम्हासनसे अग्निकोण तक पूर्वाग्र बिछाये। तीसरे भाग को नैऋत्यकोण से वायव्यकोण तक उत्तराग्र बिछाये और चोथे भाग को वायव्यकोण से ईशानकोण तक पूर्वाग्र बिछाये। पनुः दाहिने हाथ से वेदी के ईशानकोण से प्रारम्भकर वामवति ईशान पर्यन्त प्रदक्षिणा करे।
- **पात्रासादनम्** — पवित्रच्छेदना दर्भा: त्रय: (पश्चिम में पवित्र छेदन हेतु 3 कुश)। पवित्रे द्वे (पवित्र करने हेतु कुश)। प्रोक्षणीपात्रम् (प्रोक्षणी पात्र)। आज्यस्थाली (घी का कटोरा)। चत्स्थाली (चरु पात्र)। सम्मार्जनकुशा: पञ्च (मार्जन हेतु 5 कुश)। उपयमनकुशा: पंच (5 कुशा गूंथ कर उत्तर से पश्चिम की तरफ रखें)। समिधस्तिस्र: (अंगूठे से तर्जनी के बराबर 3 लकडी)। स्रुक् । स्रुव: आज्यम् (स्रुवा का घृत धरे)। तण्डुला: (चावल)। पूर्णपात्रम्। उप कल्पनीयानि द्रव्याणि। दक्षिणा वरो वा। पूर्णाहुति के लिये नारिकेल आदि हवन सामग्री मगा कर पश्चिम से पूर्व तक उत्तराग्र अथवा अग्नि के के उत्तर की ओर पर्वाग रख लें।
- पवित्रक निर्माण — द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वयोर्मूलेन द्वो कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य त्रयाणां मूलाग्राणि एकीकृत्य अनामिकांगुष्टेन द्वयोरग्रे छेदयेत्। द्वे ग्राहये। त्रीणि अन्यच्च उत्तरत: क्षिपेत्।
- प्रोक्षणीपात्र — प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य प्रात्रान्तरेण चतुर्वारं जलं प्रपूर्य वामकरे पवित्राग्र दक्षिणे पवित्रयोर्मूलं धृत्वा मध्यत: । **पवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम् प्रोक्षणीपात्रजलस्य** (प्रोक्षणी पात्र से 3 बार अपने ऊपर छींटा मारे)। **प्रोक्षणीनां सव्यहस्ते करणम्** (प्रोक्षणी पात्र को सीधे हाथ से बांये हाथ पर रखें) । दक्षिणहस्तं उत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकांगुल्यो: मध्यपर्वाभ्यां अपां त्रिरुद्गिंगनम्। **प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्** (प्रणीता के जल से प्रोक्षणी पात्र में 3 बार छींटा दें)। **प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्या: प्रोक्षणम्** (प्रोक्षणी पात्र के जल से सब जगह छींटा दें।

- **चरु निर्माण**

चरु स्थाल्या प्रोक्षणम् । सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम् । उपयमनकुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम् । स्रुवस्य प्रोक्षणम् । स्रुच: प्रोक्षणम् । उपयमनकुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम् । स्रुवस्य प्रोक्षणम् । स्रुचः प्रोक्षणम् । आज्यस्य प्रोक्षणम् । तंडुलानां प्रोक्षणम् । पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम् । प्रणीताग्न्योर्मध्ये असञ्चरदेशे प्रोक्षणीनां निधानम् (अग्नि और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र रख दें) । आज्य स्थाल्यामाज्य निर्वाप: (घृत कटोरे में देख लें कुछ अशुद्ध तो नहीं है) । चरुस्थाल्यां तण्डुलप्रक्षेप: । तस्य त्रि: प्रक्षालनम् । चरुपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य दक्षिणत: ब्रम्हाणा आज्याधिश्रयणं मध्ये चरोरधिश्रयणं आचार्येण युगपत् । (अग्नि के उत्तर दिशा में प्रणीता के जल से आसेचन कर चरु को रखें) ।

- **पर्यग्नि करणम्**

ज्वलितोल्मुकेन उभयो: पर्यग्निकरणम् (अग्नि को जला दें) । **इतरथावृत्ति**: । अर्द्धाश्रिते चरौ स्रुवस्य प्रतपनम् ।

- **स्त्रुवा का सम्मार्जन**

सम्मार्गकुशै: सम्मार्जनम् । अग्रैः अग्रंम् । मूलैः मूलम् । प्रणीतोदकेना अभ्युक्षणम् । पूनः प्रतपनम् । देशे नीधानम् । (स्त्रुवा के पूर्वाग्र तथा अधोमुख लेकर आग पर तपायें । पुनः स्त्रुवा को बाये हाथ में रखकर दायें हाथ से सम्मार्जन करें) ।

- **घृत-चरु पात्र स्थापना**

आज्योद्वासनम् । चरोरुद्वासनम् । (घी पात्र एवं चरु पात्र को वेदी के उत्तर भाग में रख दें) ।

- **घृत उत्प्लवन**

घृत उत्प्लवन । स्त्रुवा से थोडा घृत लेकर चरु में डाल दें ।

- **3 समिधा की आहुति**

उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय तिष्ठन् समिधोभ्याधाय । (तीन समिधा घी में डुबोकर खडे होकर मन में प्रजापति का ध्यान करते हुए अग्नि में डाल दें) ।

- **पर्युक्षण (जलधर देना)**

प्रोक्षण्युदकशेषेण सपवित्रहस्तेन अग्ने: ईशानकोणादारभ्य ईशानकोणपर्यंतं प्रदक्षिणवत् पर्युक्षणम् । हस्तस्य इतरथावृत्तिः । पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् । दक्षिणजान्वच्य जुहोति । तत्र आज्यभागौ च ब्रम्हाणा अन्वारब्धः स्त्रुवेण जुहुयात् । (प्रोक्षणी पात्र से जल लेकर ईशान कोण से ईशान कोण तक प्रदक्षिणा करें । एवं संखमुद्रा से स्त्रुवा को पकड कर हवन करें) ।

- **द्रव्यत्याग**

बहुकर्तृक हवन में यथा समय प्रति आहुति के बाद प्रोक्षणी पात्र में त्याग करना असम्भव है । अतः सब हवनीय द्रव्य तथा देवताओं को ध्यान कर निम्न वाक्य को पढकर जल भूमि पर गिरा दें । **इदमुपकल्पितं समित्तिलादि द्रव्यं या या यक्ष्यमाण देवता स्ताभ्य स्ताभ्यो मया परित्यक्त न मम ।**

॥ आहुति मंत्र ॥

- **घी आहुति**

वेदी के आगे अपनी ओर एक प्रोक्षणी पात्र में थोडा सा जल रखें।
घी की आहुति देने के बाद स्त्रुवा का शेष घी इसी कटोरी के जल में छोड दें।

- **ॐ प्रजापतये स्वाहा** **इदं प्रजापतये न मम।**
- **ॐ इन्द्राय स्वाहा** **इदं इन्द्राय न मम।**
- **ॐ अग्नये स्वाहा** **इदं अग्नये न मम।**
- **ॐ सोमाय स्वाहा** **इदं सोमाय न मम।**
- **ॐ भू: स्वाहा** **इदं अग्नये न मम।**
- **ॐ भुव: स्वाहा** **इदं वायवे न मम।**
- **ॐ स्व: स्वाहा** **इदं सूर्याय न मम।**
- **ॐ यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।**
  तद्वद्देवो पघातानां शान्तिर्भवति वारिका॥ यजमान के सिर पर जल छिड़कें।

शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु यत्पापं रोगं अकल्याणम् तद्दूरे प्रतिहतमस्तु, द्विपदे चतुष्पदे सुशान्तिर्भवतु

- **पंच वारुण आहुति**

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठा:।
यजिष्ठो वह्नितम: शोचानो विश्वा द्वेषा ७ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥१॥
इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥

- **ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।**
  अव यक्ष्व नौ वरुण ७ रराणो वीहि मृडीक ७ सुहवो न एधि स्वाहा॥२॥
  इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥
- **ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभि शस्तिपाश्च सत्व मित्व मयाऽअसि।**
  अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज७स्वाहा॥३॥
  इदमग्नये न मम॥
- **ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया: पाशा वितता महान्त:।**
  तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत: स्वर्का: स्वाहा॥४॥
  इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य: स्वर्केभ्यश्च न मम॥
- **ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवाधमं विमध्यम ७ श्रथाय।**
  अथा वय मादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा॥५॥
  इदं वरुणायादित्यायादितये न मम॥
- **जल स्पर्श – आचमन करें**

- आहुति के समय प्रत्येक नाम के साथ नमः के उपरान्त स्वाहा का प्रयोग करें।

	पृष्ठ		पृष्ठ
▪ गौरी गणेश आहुति	09	▪ चतु:षष्ठि योगिनी आहुति	33
▪ नवग्रह आहुति	35	▪ क्षेत्रपाल आहुति	34
▪ षोडश मातृका आहुति	22	▪ सर्वतोभद्र मण्डल आहुति	40
▪ सप्तस्थल मातृका आहुति	25	▪ वास्तु आहुति	41
▪ सप्तघृत मातृका आहुति	26		

- गूलर की लकडी, खीर, घी, शाकल्य से हवन करें।

१. ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमी वो भवान:।
यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।

२. ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभि रश्वे भिरिन्दो। अजरा सस्ते सख्ये स्याम
पितेव पुत्रान्प्रतिन्न जुषस्य शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्प्दे। स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।

३. ॐ वास्तोष्पते शग्मया ७ सदाते सक्षी महि हिरण्य या गातु मत्या।
पाहि क्षेम उत योगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभि: सदान:। स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।

४. ॐ अमिवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्या विशन्।
सखा सुशेव एधिन। स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।

- बेल का ५ टुकडा लेकर घी और शाकल्य के साथ हवन करें।
  - ॐ वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां सत्रं सौम्यानां द्रप्सो भेत्ता पुरां शाश्वती नाभिन्द्रो मुनीनां ७
    सखा शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये न मम।

- तिल या घी की ८ आहुति निम्न मंत्र से दें।
  - ॐ अघोरेभ्यो थघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्य:।
    सर्वेभ्य: सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रुपेभ्य:। स्वाहा। इदं घोराय न मम।

- अग्नि की पूजा कर दें
  - अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
    यु योध्यस्मज् जूहु राणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम। स्वाहा। इदं अग्ने वैश्वानराय न मम।

- **निम्न मंत्रो से ६ आहुति दें।**

१. ॐ अग्नि मिन्द्रं बृहस्पतिं विश्वांश्च देवानुप ह्वये।
सरस्वतीं च वाजीं च वास्तु मे दत्त वाजिनः। स्वाहा। इदंअग्ने इन्द्रादिभ्यो न मम।

२. ॐ सर्पदेवजनान् सर्वान् हिमवन्त ७ सुदर्शनम्। वसूँश्च रुद्रान् आदित्यान् ईशानम् जगदैः सह।
एतान् सर्वान् प्रपद्येहम् वास्तु मे दत्त वाजिनः। स्वाहा। इदं सर्वजनादिभ्यो न मम।

३. ॐ पूर्वाह्णम् पराह्णम् चो भौ मध्यन्दिना सह। प्रदोष मर्धरात्रं च व्युष्टां देवीं महापथाम्।
एतान् सर्वान् प्रपद्येहम् वास्तु मे दत्त वाजिनः। स्वाहा। इदं महापथादिभ्यो न मम।

४. ॐ कर्तारञ्च विकर्तारं विश्व कर्माण मोषधींश्च वनस्पतीन्।
एतान् सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः। स्वाहा। इदं सर्वेभ्यो न मम।

५. ॐ धातारं च विधातारं निधीनां च पतिं ७ सह।
एतान् सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः। स्वाहा। इदं न मम।

६. ॐ स्योन ७ शिवमिदं वास्तु दत्तं ब्रह्मप्रजापती।
सर्वाश्च देवताश्च। स्वाहा। इदं न मम।

- ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।

॥ पुरुष सुक्त से आहुति ॥

1. ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात्।
स भूमि ७ सर्व तस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद् दशांगुलम्॥
2. पुरुषऽ एव इद ७ सर्वम् यद्भूतम् यच्च भाव्यम्।
उता मृत त्वस्ये शानो यदन्ने ना तिरोहति॥
3. एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि॥
4. त्रिपाद् उर्ध्व उदैत् पुरूषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि॥
5. ततो विराड् जायत विराजोऽ अधि पुरुषः।
सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः॥
6. तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतम् पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये॥
7. तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्मात् यजुस तस्माद् जायत॥
8. तस्मा दश्वा ऽ अजायन्त ये के चो भयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः॥
9. तं यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषम् जात मग्रतः।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये॥
10. यत् पुरुषम् व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखम् किमस्यासीत् किम् बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते॥
11. ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ७ शूद्रो अजायत॥
12. चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
13. नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः सम-वर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्ऽ अकल्पयन्॥
14. यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत।
वसन्तो ऽ स्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः॥
15. सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन् तन्वानाः अबध्नन् पुरुषम् पशुम्॥
16. यज्ञेन यज्ञ मऽयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

॥ श्रीसूक्त से आहुति ॥

1. हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥
2. तां म आवह जातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
3. अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥
4. कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
5. चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतांत्वां वृणे ॥
6. आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तुमायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥
7. उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥
8. क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमे गृहात् ॥
9. गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरींसर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
10. मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतांयशः ॥
11. कर्दमेन प्रजाभूतामयि सम्भवकर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥
12. आपः सृजन्तुस्निग्धानि चिक्लीतवसमे गृहे ।
निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥
13. आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥
14. आर्द्रां यःकरिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥
15. तां म आवह जातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥
16. यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

॥ बलिदान प्रयोगः ॥

- एक पत्ते पर खीर, घी, दही, ऊरद लेकर वास्तुपीठ के सामने रख दें।
- **हाथ में जल लेकर कहे** ॐ शिख्यादि सहितो वास्तुदेव देवेश सन्निभ ।
गृहाणेमं बलिं देव वास्तुदोषं प्रणाशय ॥
- प्रार्थना ॐ स्वर्ग पाताल मर्त्येषु य देवा वास्तु सम्भवाः ।
गृह्णात्विमं बलिं हृद्यं तुष्टा यातु स्वमंदिरम् ॥
  - मातरो भूत वेताला ये यान्ये बलिकांक्षिणः ।
विष्णोः पारिषदान्ये च तेपि गृह्णत्विमं बलिम् ॥
  - पितृभ्यः क्षेत्रपालेभ्यो ये चान्ये भैरवादयः ।
ते सर्वे तृप्ति मायान्तु वास्तु दोषः प्रणश्यतु ॥

- **दशदिक्पालादीनां बलिदानम्**

1. **इन्द्रम्** (पूर्व) — **ॐ त्रातार-मिन्द्र मवितार-मिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूर-मिन्द्रम् । ह्वयामि शक्क्रं पुरु-हूत मिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥**
   - हाथ में जल लें — **पूर्वे इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।**
   - हाथ जोडकर रखें — **भो इन्द्र दिशंरक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।**
   - अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन इन्द्र देवताः प्रीयतां न मम् ।

2. **अग्निम्** (अग्निकोण) — **ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ७ रक्षमाणस्तवव्व्रते ॥**
   - हाथ में जल लें — **अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।**
   - हाथ जोडकर रखें — **भो अग्नये दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।**
   - अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन अग्नि देवताः प्रीयतां न मम् ।

3. **यमम्** (दक्षिण) — **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्माय पित्रे ॥**
   - हाथ में जल लें — **दक्षिणे यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।**
   - हाथ जोडकर रखें — **भो यम दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।**
   - अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन यम देवताः प्रीयतां न मम् ।

4. **निर्ऋतिम्**(नैर्ऋत्यकोण) — **ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छस्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ मा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥**
   - हाथ में जल लें — **निऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।**
   - हाथ जोडकर रखें — **भो निऋते दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।**
   - अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन नैऋतये देवताः प्रीयतां न मम् ।

5. **वरुणम्** (पश्चिम) — **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।**

अहेणमानो वरुणेह बोध्युरूश ७ समानऽआयु: प्रमोषी:॥

- हाथ में जल लें — **पश्चिमायां वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।**
- हाथ जोडकर रखें — **भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।**
- अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन वरुण देवता: प्रीयतां न मम् ।

6. **वायुम्** (वायव्यकोण) — **ॐ आ नो नियुद्भि: शतिनीभिरद्धव ७ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभि: सदा न: ।**

- हाथ में जल लें — **वायव्यां वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।**
- हाथ जोडकर रखें — **भो वायो दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।**
- अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन वायु देवता: प्रीयतां न मम् ।

7. **कुबेरम् (उत्तर)** — **ॐ वय ७ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत:। प्रजावन्त: सचेमहि ॥**

- हाथ में जल लें — **उत्तरस्यां कुबेराय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।**
- हाथ जोडकर रखें — **भो कुबेर दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।**
- अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन कुबेर देवता: प्रीयतां न मम् ।

8. **ईशानम्** (ऐशान्यकोण) — **ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयं । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये ॥**

- हाथ में जल लें — **ऐशान्यामीशानाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।**
- हाथ जोडकर रखें — **भो ईशान दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।**
- अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन ईशान देवता: प्रीयतां न मम् ।

9. **ब्रह्माणम्** (मध्य) — **ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोष: । य:श ७ सते स्तुवते धायि पज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवा: ॥**

- हाथ में जल लें — **ईशान पूर्वयोर्मध्ये ब्रह्मणे वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।**

- हाथ जोडकर रखें — **भो ब्रह्मन दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
- अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन ब्रह्मन देवताः प्रीयतां न मम्।

10. अनन्तम् (नैर्ऋत्य पश्चिम के मध्य) — **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा नः सर्मसप्रथाः॥**

- हाथ में जल लें — **निऋति पश्चिमयोर्मध्ये अनंताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
- हाथ जोडकर रखें — **भो अनंत दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
- अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन अनंत देवताः प्रीयतां न मम्।

एकतंत्रेण दशदिक्पालादीनां बलिदानम्

- हाथ में जल लें — **इन्द्रादि दश दिक्पालेभ्यः सांगेभ्य सपरिवारेभ्य सायुधेभ्य सशक्तिकेभ्य एतान् सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
- हाथ जोडकर रखें — **भो इन्द्रादि दशदिक् पालाः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुकर्ताः क्षेमकर्ताः शांतिकर्ताः पुष्टिकर्ताः तुष्टिकर्ताः वरदा भवत्।**
- अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन प्रीयतां न मम्।

नवग्रह बलिदानम्

- बलिदान मंत्र — **ॐ ग्रहाऽऊर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज ७ समग्रभ मुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम॥**
- संकल्प — **सूर्यादि नवग्रह मंडल देवान् सांगान्। सपरिवारान्। सायुधान्। सशक्तिकान्। एभिः गंधाद्युपचारैः वः अहं पूजयामि।**
- हस्ते जलमादाय — **सूर्यादि नवग्रह मंडल देवेभ्य सांगेभ्य। सपरिवारेभ्य। सायुधेभ्य। सशक्तिकेभ्य इमं सदीपं आसादित बलिं समर्पयामि॥**
- हाथ जोडकर रखें — **भो भो सूर्यादि नवग्रह मंडल देवाः इमं बलिं गृहणीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। मम गृहे आयुः कर्तारः। क्षेमकर्तारः। शांतिकर्तारः। पुष्टिकर्तारः। तुष्टिकर्तारः। निर्विघ्नकर्तारः। कल्याणकर्तारः वरदा भवत।**
- हस्ते जलमादाय — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन सूर्यादि नवग्रह मंडल देवाः प्रीयतां न मम्।

- **क्षेत्रपाल बलिदानम्**
  - संकल्प — **ॐ अद्येत्यादि मम सकलारिष्ट शान्ति पूर्वकं प्रारब्ध कर्मणाः सांगता सिद्ध्यर्थञ्च क्षेत्रपाल पूजनं बलिदानञ्च करिष्ये।**
  - बलिदान मंत्र — **ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणाधिप।**
    पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥
    - **आयु आरोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।**
      मा विघ्नं मास्तु मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥
    - **मा विघ्नं मास्तु मे पापं मा सन्तु परिपंथिनः।**
      सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः॥
  - हस्ते जलमादाय — **ॐ क्षेत्रपालाय डाकिनी-शाकिनी-भूत-प्रेत-बैताल-पिशाच सहिताय इमं सदीपं आसादित बलिं समर्पयामि॥**
  - हाथ जोडकर रखें — **भो भो क्षेत्रपाल दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। मम गृहे आयुः कर्ता। क्षेमकर्ता। शांतिकर्ता। पुष्टिकर्ता। तुष्टिकर्ता। निर्विघ्नकर्ता। कल्याणकर्ता वरदा भव।**
  - अर्पण करें — **अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन क्षेत्रपाल देवताः प्रीयतां न मम्।**
  - पीली सरसौ छिडके — **ॐ भूताय त्वा नारातये स्वरभि विख्येषं दृ ७ हन्तां दुर्याः पृथिव्या मुर्वन्तरिक्ष मन्वेमि। पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्य दित्या ऽउपस्थेऽग्ने हव्य ७ रक्ष॥**

- **स्विष्टकृत् होम** — हवन से अवशिष्ट हवि द्रव्य को लेकर स्विष्टकृत् होम करें।
  ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।
  प्रोक्षण्यां त्यागः उदक स्पर्शः

॥ पूर्णाहुति ॥

- **पूर्णाहुति संकल्प** — अद्य गोत्रः नामाहम् मम मनोभिलषित धर्मार्थकामादि यथेप्सित् आयु आरोग्य एश्वर्य पुत्र-पौत्र पशु सखि सुहत सम्बन्धित बन्ध्वादि प्राप्तये अस्मिन कर्मणि आवाहित देवतानां प्रीतये च दत्तैताभिः आहुतिभिः परिपूर्णता सिद्धये वसोर्धारा समन्वितं पूर्णाहुति होमं करिष्ये।
- **पूर्णाहुति मंत्र** — **पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञै।**
  घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥
  - **मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।**
    कवि ७ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रां जनयन्त देवाः॥
  - **पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।**
    वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ७ शतक्रतो स्वाहा॥

- **वसोर्धारा** — कटोरी में जो भी घी वचा है, उसे धारा देते हुए हवन में छोड दें।
  - **घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।**
    अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥
  - **ॐ वसोः पवित्रामसि शतधारं वसोः पवित्रामसि सहश्रधारम्।**
    देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रोण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

- **भस्म धारणम्** — अग्नि के इशानकोण से स्त्रुवा द्वारा हवन की राख लेकर अनामिका अंगुली से अपने लगा लें।
  - **ॐ त्रयायुषं जमदग्नेरिति** ललाटे।
  - **कश्यपस्य त्र्यायुषम्** ग्रीवा में।
  - **यद्-देवेषु त्र्यायुषम्** दक्षिण बाहु में।
  - **तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्** हृदय में।
  - **श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम।**
    तेज आयुष्य आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन।

- **तर्पण** — एक पात्र में थोडा सा जल लेकर कुशा से अग्नि पर २८ बार गायत्री मंत्र एवं तर्पयामि बोलते हुए जल छिडके।

- **मार्जन** — एक पात्र में थोडा सा जल लेकर कुशा से अग्नि पर २८ बार गायत्री मंत्र एवं मार्जयामि बोलते हुए जल छिडके।

- **संश्रव प्राशनम्** — प्रोक्षणी पात्र में छोड़े गये घी को यजमान अनामिका एवं अंगूठा से पीये।
  - **ॐ यस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः।**
    तं संश्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम्॥

  आचमन कर प्रणीता पात्र में स्थित दोनों पवित्री का ग्रन्थि खोलकर उसे शिर पर लगाकर अग्नि में छोड़ दें।

- प्रणिता पात्र ईशानादि में उलट दें — **ॐ दुर्मि त्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म।**

- **पूर्ण पात्र दान** — कृतस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् ब्रह्मन् इदम् पूर्णमात्रं सदक्षिणकं तुभ्यमहं संप्रददे।
  ब्रह्मा - प्रतिगृह्णामि

- **बर्हि होंम** — बिछाये गये बर्हि कुश को घी में डुबाकर अग्नि में डाल दें
  ॐ देवा गातु विदो गातु वित्वा गातु मित मनसस्पत
  इमं देव यज्ञ ७ स्वाहा वातेधाः स्वाहा।

- **शंकूरोपण** (कीला गाडना) पान के पत्ते पर ४ लोहे का या नाव का कीला रखें।
  - चारों कीले का पंचोपचार पूजा करें।
  - पूजा के उपरान्त चारों कीले को घर या आंगन में दीवाल के कोने में गाड दें।

- **प्रार्थना**
  ॐ विशन्तु भूतले नागा लोक पालाश्च सर्वत: ।
  अस्मिन् गृहे व तिष्ठन्तु आयुर्बलकरा: सदा ॥

१. ईशान कोण में
ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तत् समाश्रिता:।
बलिं तेभ्य: प्रयच्छामि गृह्णन्तु सत तोत्सुका: ॥

२. अग्नि कोण में
ॐ अग्निभ्यो प्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तत् समाश्रिता: ।
बलिं तेभ्य: प्रयच्छामि पुण्यमोदन मुत्तमम् ॥

३. नैर्ऋत्य कोण में
ॐ नैर्ऋत्याधि पतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसा: ।
बलिं तेभ्य: प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मन्त्रिता: ॥

४. वायव्य कोण में
ॐ वायव्याधि पतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसा: ।
बलिं तेभ्य: प्रयच्छामि पुण्यमोदन मुत्तमम् ॥

- **त्रिसूत्र वेष्टन** कच्चे सूत के धागा का तीन ताग कर के लाल रंग में रंग लें।
  - यजमान तीन ताग वाला लाल सूत लेकर घर के बाहर ईशान कोण से चारो ओर एक परिक्रमा कर ले।
  - एक व्यक्ति दुध और एक व्यक्ति पानी लेकर यजमान के पिछे पिछे धार देता चले।

- ताागा घुमाने का मंत्र
  ॐ कृणुष्व पाज: प्रसितिं न पृथिवीं राजे वामवाँ इ भेन ।
  तृष्वी मनु प्रसितिं द्रूणानो स्तासि विध्य रक्षसस् तपिष्ठै: ॥१॥
  - **तवभ्रमास आशु या पतन् त्यनु स्पृश ध्रृषता शोशुचान: ।**
    तपू ७ ष्यग्ने जुह्वा पतंगा न सन्दितो विसृज विष्वगुल्का: ॥२॥
  - **प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्ध: ।**
    यो ना दूरेऽ अघ शं ७ सो यो अन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरा दधर्षीत् ॥३॥
  - **उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ ओषतात् तिग्महेते ।**
    यो नो अरातिं ७ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यत सं न शुष्कम् ॥४॥
  - **ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या ध्यस्मदा विष् कृणुष्व दैव्या न्यग्ने। अव स्थिरा तनुहि यातु जूनाम् जामिम जामिम् प्रमृणीहि शत्रून्। अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि ॥५॥**

- धार देने का मंत्र
  ॐ पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसा धिय:।
  पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद: पुनीहि माम् ॥१॥
  - **पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ रनु ॥२॥**
  - **यत्ते पवित्र मर्चिष्यग्ने वितत मन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥३॥**

- **पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणि । यः पोता स पुनातु मा ॥४॥**
- **उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सनेव च । मां पुनीहि विश्वतः ॥५॥**
- **वैश्वदेवी पुनती देव्या गाद्य स्या मिमा वह्वयस् तन्वो वीत पृष्ठाः ।**
  तया मदन्तः सध मादेषु वय ७ स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

- घर के अन्दर एवं बाहर जल से अभिमंत्रीत करें ।
  - एक बर्तन में शहद, घी, दूध, दही, गोबर, जव, कुशा मिला कर रख लें ।
  - उसी जल से घर के अन्दर एवं बाहर निम्न मंत्रो के द्वारा जल छिडके ।
- घर के अन्दर
  - **पूर्व में** — **ॐ श्रीश्च त्वा यशश्च पूर्वे सन्धौ गोपायेताम् ॥**
  - **दक्षिण में** — **ॐ यज्ञश्च त्वा दक्षिणा च दक्षिणे सन्धौ गोपायेताम् ॥**
  - **पश्चिम में** — **ॐ अन्नश्च त्वा ब्राह्मणाश्च पश्चिमे सन्धौ गोपायेताम ॥**
  - **उत्तर में** — **ॐ ऊर्क्च त्वा सूनृता चोत्तरे सन्धौ गोपायेताम् ॥**
- घर के बाहर चारों ओर की दीवाल पर जल छिडकें ।
  - **पूर्व में** — **ॐ केता च मा सुकेता च पुरस्ताद् गोपायेता मित्यग्निर्वै केत्यो दित्यः सुकेता तु प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पुरस्ताद् गोपायेताम् ॥**
  - **दक्षिण में** — **ॐ गोपायमानञ्च मा रक्षमाणा च दक्षिणतो गोपायेता मित्यहर्वै गोपायमान ७ रात्री रक्षमाणा ते प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु ते मा दक्षिणतो गोपायेताम् ॥**
  - **पश्चिम में** — **ॐ दीदिवश्च मा जागृविश्च पश्चाद् गोपायेताम मित्यन्नं वै दीदिविः प्राणो जागृविस्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पश्चाद् गोपायेताम् ॥**
  - **उत्तर में** — **ॐ अस्वप्नश्च माऽ नव द्राणश्चोत्तरतो गोपायेता मिति चन्द्रमा वा अस्वप्नो वायुरनव द्राणस्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मोत्तरतो गोपायेताम् ॥**

॥ गृह प्रवेश कर्म ॥

- एक कलश में जल लेकर सुवासिनी स्त्रियों को आगे करके मुख्य द्वार पर आकर बैठ जांय ।
- आचमन करके हाथ में संकल्प लें ।
- **संकल्प** — अद्य अस्मिन पुण्याहे अमुक गोत्रः अमुक नामाहं श्रौत स्मार्त कर्म करणार्थं संस्कारानेक भोगैश्वर्यादि विविध मंगलोदय सिद्धये एतन् नवीनगृह प्रवेशमहं करिष्ये ।
- **प्रार्थना** — **ॐ स्थापितेयं मया शाखा शुभदा ऋद्धिदास्तु मे ।**
  सुपूजिता मया शाखा सर्वदा सुस्थिरास्तु मे ॥

- **चौखट पूजन** — दायीं, बायीं, ऊपरी एवं नीचे चोरो चौखट को प्रणाम करें।
  - **दायी चौखट** — **यो धारयति सर्वेशो जगन्ति स्थावराणि च।**
    धाता दक्षिणशाखायां पूजितो वरदोऽस्तु मे॥ ॐ धात्रे नमः॥
  - **वायीं चौखट** — **यः समुत्पाद्य विश्वेशो भवनानि चतुर्दश।**
    विधाता वाम शाखायां स्थिरो भवति पूजितः॥ ॐ विधात्रे नमः॥
  - **ऊपरी चौखट** — **गजवक्त्र गणाध्यक्ष हे हेरम्बाम्बिकात्मज।**
    विघ्नान्निवारयाशुत्वमूर्ध्वोदुम्बरसंस्थितः॥ ॐ गणपतये नमः॥
  - **नीचे चौखट (देहली)** — **यस्या प्रसादात् सुखिनो देवाः सेन्द्राः सहोरगाः।**
    सा वै श्री देहली संस्था पूजिता ऋद्धिदाऽस्तु मे॥ ॐ देहिल्यै नमः॥
  - तथा पुनः अक्षतपुष्पादि लेकर दोनों हाथ जोड़कर, निम्नांकित प्रार्थना करे।

- **प्रार्थना** — **ॐ धर्मार्थ काम सिद्ध्यर्थं पुत्र पौत्राभिवृद्धये।**
  त्वामहं प्रविशाम्यद्य भगो मन्दिर ते नमः॥
  - **यावत् चन्द्रश्च सूर्यश्च यावत् तिष्ठति मेदिनी।**
    तावत् त्वं मम वंशस्य मङ्गला भ्युदयं कुरु॥
  - पुनः देहली को स्पर्श करते हुए प्रणाम करे।
  - शंखघोष करते हुए यजमान पत्नी बायाँ पैर और यजमान दायां पैर आगे बढ़ाकर भवन में चारो तरफ घुमते हुए पूर्व सम्पादित वास्तु पूजा मण्डप में प्रवेश करें।
  - **ॐ धर्म स्थूणा राज श्री स्तुप महोरात्रे द्वारफलके इन्द्रस्य गृहा वसुमन्तो वरुथिनस् तामहं प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिः सह। यन्मे किञ्चिदस् त्युपहूतः सर्वगणः सखायः साधु संवृतः। तां त्वा शालेऽरिष्ठ वीरा गृहान्न सन्तु सर्वतः॥**

- **भंडारगृह पूजन** — **ॐ अस्मिन नूतन गृहे पुण्याहं कल्याणं श्रीरस्तु॥**

- **स्तम्भ पूजन** — **ॐ धारणार्थ महाभाग निर्मितो विश्वकर्मणा।**
  स्थापितः शुभदो नित्यं गृहभार क्षमो भवत्॥

- **चूल्हा पूजन** — **ॐ महानस इतिख्यातो देव यज्ञादि सिद्धि कृत्।**
  अन्नादि साधनं स्थानं धर्ममूलं शुभप्रदम्॥ ॐ चूल्यां धर्माय नमः॥

- **जल स्थान पूजन** — **ॐ शंख स्फटिक वर्णाभ श्वेत हाराम्बरावृत।**
  पाश हस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे॥ ॐ वरुणाय नमः॥

- **चक्की (जांत) पूजन** — **ॐ सौभाग्यं सुभगे पेषणी संस्थिता सदा।**
  पिष्ट निष्पादनार्थ त्वं पूजिता शुभदास्तुमे॥ ॐ सुभगायै नमः॥

- **उलूखल (ओखरी) पूजन** ॐ व्रीहीणां कंडनं यच्च तुषाणां च विमोचनम्।
त्व दधीन मतः पूजां करोमि तव सिद्धये॥ ॐ रौद्रपीठाय नमः॥
- **मूसल पूजन** ॐ वलभद्र पियाय नमः॥
- **सूप पूजन** ॐ किन्नराय नमः॥
- **शयन कक्ष पूजन** ॐ कामः कामप्रदो मेस्तु शयनीये सुपूजित।
पूजां गृहाणभो सुमुख धन धान्य समृद्धये॥ ॐ सुमुखाय नमः॥
- **पशु स्थान पूजन** ॐ सर्वाधियो महादेव ईशानः शुक्ल शंकरः।
पशूनां पति रस्माकं पूजितः शुभदः सदा॥ ॐ पशुपतये नमः॥
- **प्रार्थना** ॐ एते सुपूजिता देवाः सन्तु मे सर्वसिद्धिदा।
नश्यन्तु सर्वविघ्नानि देवानां पूजनादिह॥ ॐ सर्व देवोभ्यो नमः॥
- **छाया दर्शन** यजमान अपने सामने धान्य के उपर एक नया घी से भरा कटोरा रखे।
    - पंचोपचार पूजा कर दे।
    - घी भरे कटोरे में अपनी परछाई देखें।
    - **ॐ रुपेण वो रुप मभ्या गान् तु थो वो विश्व वेदा विभजतु।
    ऋतस्य चथा प्रेत चन्द्र दक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं व्यत् तस्व सदस्यैः॥**

॥ जगदीश जी की आरती ॥

- **ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे। भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे॥१॥** जय जगदीश हरे...
- **जो ध्यावे फल पावै, दुख बिनसे मन का। सुख-संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का॥२॥** जय जगदीश हरे...
- **मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी। तुम बिनु और न दूजा, आस करूं जिसकी॥३॥** जय जगदीश हरे...
- **तुम पूरन परमात्मा, तुम अंतरयामी। पारब्रह्म परेमश्वर, तुम सबके स्वामी॥४॥** जय जगदीश हरे...
- **तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता। मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥५॥** जय जगदीश हरे...
- **तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥६॥** जय जगदीश हरे...
- **दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे। अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥७॥** जय जगदीश हरे...
- **विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥८॥** जय जगदीश हरे...
- **तन-मन-धन, सब कुछ है तेरा। तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा॥९॥** जय जगदीश हरे...
- **श्याम सुंदर जी की आरती, जो कोई नर गावे। कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे॥१०॥** जय जगदीश हरे...

- **पुष्पांजलि**

ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

- ॐ राधाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रणाय कुर्महे ।
समे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।
- ॐ स्वास्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्य
माधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः । सार्वायुष आन्तादा परार्धात ।
पृथिव्यै समुद्र पर्यान्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽ भिगितो मरुतः परिवेष्टारो
मरुतस्या वसन्नगृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इतिः।
- ॐ विश्व तश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात ।
सम्बाहूभ्यां धमति सम्पत्त्रैर्द्यावा भूमी जनयंदेव एकः ॥
- नानासुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

- **प्रदक्षिणा**

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणं पदे पदे ॥

- **प्रणाम**

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

- कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ॥
- पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहिमां पार्वती नाथ सर्वपापहरो भव ॥

- **क्षमा प्राथना**

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे ॥

- आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥
- अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽ यमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥
- अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥
- ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

- **समर्पण**

अनेन कृतेन पूजनेन भगवान / भगवती .... प्रीयताम्, न मम । .... अर्पणमस्तु ।

- **प्रधान दक्षिणा**

ॐ अद्य कृतस्य सग्रह याग वास्तुशान्ति कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं यथाशक्ति दक्षिणां अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे आचार्याय, तथा च अमुक ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

- आचार्य **स्वस्ति** बोलकर यजमान पर अक्षत छिड़कें।

- **उत्तर पूजन**

ॐ आवाहित देवताभ्यो नमः। उत्तर पूजां गृहणन्तु प्रीयन्ताम्।

- **विसर्जन**

ॐ यान्तु देव गणः सर्वे, पूजामादाय मामकीम।
इष्ट-काम-समृद्धयर्थं, पुनरागमनाय च॥

- **ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।**
यत्र ब्रम्हादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन॥

- **प्रार्थना**

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः॥

- **यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।**
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

- **आशिर्वाद**

श्री वर्चस्व मायुष्य मारोग्यं गावधात् पवमानं महीयते।
धन धान्यं पशुं बहुपुत्र लाभं शतसंवत्सरे दीर्घमायु।

- **ॐ सफला सन्तु पूर्णा : सन्तु मनोरथा :।**
शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणां मुदयस्तव॥

- **अभिषेक मन्त्र**

अभिषेक के समय यज्ञकर्ता की पत्नी वाम भाग में रहे तथा पुत्र पौत्रादि भी निकट रहें।

- आचार्य कलश के जल से आम्र पल्लव द्वारा निम्न लिखित मन्त्रो से अभिषेक करें।
- **गणाधिपो भानु-शशी-धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनाः।**
राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ १॥
- **उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताशनस्त्रिविक्रमो भानुसखश्चतुर्भुजः।**
गन्धर्व-यक्षोरग-सिद्ध-चारणाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ २॥
- **नलो दधीचिः सगरः पुरूरवा शाकुन्तलेयो भरतो धनञ्जयः।**
रामत्रयं वैन्यबली युधिष्ठिरः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ३॥
- **मनु-मरीचि-भृगु-दक्ष-नारदाः पाराशरो व्यास-वसिष्ठ-भार्गवाः।**
वाल्मीकि-कुम्भोद्भव-गर्ग-गौतमाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ४॥
- **रम्भाशची सत्यवती च देवकी गौरी च लक्ष्मीश्च दितिश्च रुक्मिणी।**
कूर्मो गजेन्द्रः सचराऽचरा धरा कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ५॥

- गङ्गा च क्षिप्रा यमुना सरस्वती गोदावरी नेत्रवती च नर्मदा ।
  सा चन्द्रभागा वरुणा त्वसी नदी कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ६॥
- तुङ्ग-प्रभासो गुरुचक्रपुष्करं गया विमुक्ता बदरी वटेश्वरः ।
  केदार-पम्पासरसश्च नैमिषं कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ७॥
- शङ्खश्च दूर्वासित-पत्र-चामरं मणि प्रदीपो वररत्नकाञ्चनम् ।
  सम्पूर्णकुम्भः सुहुतो हुताशनः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ८॥
- प्रयाणकाले यदि वा सुमङ्गले प्रभातकाले च नृपाभिषेचने ।
  धर्मार्थकामाय जयाय भाषित व्यासेन कुर्यात्तु मनोरथं हि तत् ॥ ९॥
- ॐ सुशान्तिर्भवतु । शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु । अमृताभिषेकोऽस्तु ॥